श्रीवीतरागाय नमः

चिमनविलास

जिस को

पण्डितचिमनलालने जैनधर्मावलम्बियों के धर्मोपदेशार्थ

अनेकसंस्कृतजैनधर्मग्रन्थों के अनुसार नागरी

भाषा में अनेकप्रकारकी रागरागिणियों

में बनाकर ।।○

बालचन्द्र यन्त्रालय जयपुर में

मुद्रित कराके प्रकाशित किया।

प्रथम बार ५००



कीमत ।) आना

* ॐ नमः सिद्धेभ्यः *

अथः भजन उपदेशी

टेर—जगत में पैसे का व्यवहार ।
माई बाप है जग में पैसा पैसे की है नार ।
पैसे ही से होय मित्रता पैसे का व्योपार ॥ १ ॥
पैसा हो तो कहैं चौधरी सेठ कहैं सहुकार ।
बिन पैसे कोइ पूछै नाहीं रहै सबन में ख्वार ॥ २ ॥
पैसे के ये महल मंदिर पैसे का सब कार ।
पैसे के सब ठाठ बने हैं पैसे का बाज़ार ॥ ३ ॥
यातैं जुगत बतावो गुरुजी बणूं शीघ्र जरदार ।
होय गांठ में पैसा पूरा पूजै सब संसार ॥ ४ ॥
पैसा यातैं खोवो तुम मत नाहक सज्जन यार ।
पैसे ही से आवै चिमन में पैसा ही गुलज़ार ॥५॥
जगत में पैसे का व्यवहार ।

* पुनः पद हजूरी *

टेर—श्रीजिनवाणी बुधजनमानी शिवसुखदानी भविजन हेत ।
मैं अति पापी बहु संतापी तुम गुण सुमरूं धिषणा हेत ॥
सुणले मेरी बात तू जगत की है मात ।
भवसिंधु है अपार नइया है मझधार ।
संसार सब असार करिये बेडा पार ।
शरणागत हूं वर मांगत हूं मेट भ्रमण जग मूल समेत ॥१॥

जिनागम है अपार सब तत्वसार ।
निक्षेप चार धार परमात्म का विचार ।
मैं मंदाधिपणाहूं गुण गावतहूं आश्रित कर्म क्षय करि देत ।२। मैं०
तू त्रिलोक में है ख्यात गुण सुरेंद्र गात ।
त्रिलोक सब दिखात परमात्म ज्ञान पात ।
योगीन्द्र नित्य ध्यात कर्मोंका करि घात ।
मैं यश गावतहूं शिव चाहतहूं टाल चिमनमें कर्म डकेत ।३। मैं०

* इति पद हजूरी *

करूं प्रणाम नाभि के नंदा शिव सुख कंदा मिल के संग ।
शिव सुखदायक श्रीजिन देव सुर नर मुनि जन करतवसेव ॥
कर्मों को जलाना जीवों को तराना मोक्ष में लेजाना
तुमरा काम श्रीजिनेंद्र कर्मोंका फंद काटो । आया चिमन
शरण जगत तिरण कुमति हरण जीवन का ॥ ३ ॥

* पद हजूरी *

टेर—प्रभू मुझे बचा प्रभू मुझे बचा संसार मांहि जन्म सैं
शिर पै रहे कजा ।
क्रोध मान माया लोभ काम को देसजा ।
अज्ञान को भी चित्त से सबको तू भजा ॥ १ ॥ प्रभू०
भ्रमता चतुर्गति के मांहि कहिं न सुख मजा ।
अन्य देवन में दीखै विसयन की लगी धुजा ॥ २ ॥ प्रभू०
अब ज्यों सुना विरद तुमारा तारके जगत यातैं ।
यातैं लिया चिमनने शरण पाप सैं बचा ॥ ३ ॥ प्रभू०

* पद उपदेशी *

टेर—काहे गमाये नशाये प्राणी पाय नर भव योनियां।
नर भव दुर्लभ पाया तैं प्राणी याको न हाथ सैं हार।
श्रीजिन सुमरण कर २ निस दिन कर्मोंको करदे तू ख्वार॥
जग भोगन में फसकर तैनें कौन किया निज काज।
तज दिया तैं इसे क्या लिया सुद कर देख॥
तू है ज्ञानी शिव सुख दानी जिन बचनामृत पीकर देख।
तू परमातम बुद्धि चिदातम ज्ञाना वरणी क्षय कर देख॥
तू अविनाशी देह विनाशी तत्व निरूपन कर कर देख।
प्रिय चिमन निज रूप सम्हारो कहना मेरा कर कर देख॥५॥

* इति पद उपदेशी *

टेर—नर भव वाद ही खोय दियो।
बालपनों खेलन में खोयो योवन बनिता संग दियो।
वृद्ध भयो तृष्णा अति परणी आतम हित तू नाहिं कियो।१।
सामायक पूजा नाहिं कीनी प्रभू को नाम ना लियो।
करने का इक काम न कीना न करणे को कीयोरे।२। नरभ०
चिंता मणि को काग उड़ावत मूरख फैंक दियो।
धर्मजिनेश्वर सम न चिमन में सेवन तैं ना कियो॥
नर भव वाद ही खोय दीयो॥ ७॥

* पद हजूरी *

टेर—श्रीमज्जिनेन्द्र चरणों में हमारा नित प्रणाम।
श्री सिद्धसूरि उवझाय साधू से प्रणाम।

शिवपुर गये अनंत जीव ले तुम्हारा नाम ।
अनंत ज्ञान दर्श वीर्य सौख्य का जो धाम ॥ १ ॥
केइ ज्यो देव जगत् में लखे जो सब निकाम ।
आज तेरे दर्श पाये सर्व सिद्ध काम ॥ २ ॥
अन्य पूजते लहा नहिं छदाम ।
जिनेन्द्र चरण पूजते मिलेगी मुक्ति वाम ॥ ३ ॥
जिनेंद्र धर्म धर्म अन्य धर्म दंती चाम ।
ये विचार चिमन भजो सदा जिनेंद्र नाम ॥ ८ ॥

* पद हजूरी *

टेर—छोडकै नेम चलादिये हाय सितम गज़ब सितम ।
कुछ भी न की मेरी दया हाय सितम ॥
नव भव से संग मेरेही, दशमें विसार क्यों दई ।
तुम तो शिव रमणी लही ॥ १ ॥ हाय सि०
पशुवन ने सौर सुना दिया पीछा ही रथ कूं फिरा दिया
मेने कुसूर क्या किया ॥ २ ॥ हाय सि०
जब से गये वो छोड़ के जी को निपट बेकली ।
कटते नहीं हैं रात दिन हाय सितम ॥ ३ ॥
कर्मों का फल मैनें लहा इसमें किसी का दोष क्या ।
हारे चिमन को तज दिया हाय सितम गजब सितम ॥८॥

* पद हजूरी *

टेर—बिना अपराध मुझ को तज गये यदुराय गिरनारी ।
सभी यादव लिये संग में गजन पर करिकै असवारी ।
केई बाजन की दिव्य ध्वनी जय २ करत सुरनारी ॥१॥ बिना०

ठुमकठुमठुमठुमकठुमठुम नचे जब अप्सरा सारी ।
तथाथेइ थेइतथा थेइ थेइ तथा थेइ थेइ ज्यों गति नारी । २ । वि०
उधर पशु शोर सुनि प्रभूने तजी संसार से यारी ।
सकल भूषण वसन तजके धरी अनवृत्ति अनगारी ।।३।। वि०
कोई भव से रही संग अब पड़ी तकसीर क्या भारी ।
विना व्यवहार निश्चै नहिं लिखी आगम में ये सारी ।४। वि०
गही दीक्षा दिगंवर की अनूप्रेक्षा ज्यों सुविचारी ।
घाय शुभधान कर्मनकी प्रकृति सब नाश करडारी ।५। विना०
सुनी नाहिं कुछ भी वालाकी दयानिध वालब्रह्मचारी ।
नेम विन अन्य पति नाहीं चिमन में नियम ये धारी ।१०। वि.

* पद हजूरी *

टेर—सुनो २ प्रभूजी चेतन अरजी लाया है ।
लख चौरासी भ्रमता भ्रमता दुःख अनंता पाया ।
नरकों की यह सही वेदना क्षण भर चैन न पाया ॥ १ ॥
अन्य देव बहुतेरे सेये किंचित सुख नहिं पाया ।
ज्ञानहीन यह मूरख होकर तुम से चित्त न लाया ॥ २ ॥
पूर्वोपार्जित तोसा जो था सो सब इन्ने खाया ।
याचक वनके तेरे दर पै प्रभुजी अब यह आया ।।३।। सुनो०
तारण तिरण विडद है तेरो सतगुरु मो वतलाया ।
रखो चिमनकी लाज प्रभूजी तुम पै अब ये आया ।११। सु०

* पद हजूरी *

टेर—प्रभू तेरे चरणों का शरणा महाराज ।
पतित उधारक विडद जगत में है प्रसिद्ध जिनराज ।
अंजन आदिक पतित उधारे राखो मेरी लाज ॥ १ ॥ प्रभू०

तुमसे देवन और जगत में भव दाधि माजित पाज ॥ २॥ प्रभू०
तुमही ब्रह्मा विष्णु महेश्वर सेवै सर्व समाज ॥ ३ ॥ प्रभू०
यातै शरण चिमन तुम पदके तीन लोक शिरताज ॥१२॥ प्र०

* पद हजूरी *

टेर—अब तो प्रभूजी को लेलो शरण, लेलो शरण चलो
पूजो चरण ।
अनादि कालसे कर्मनके बश चहूं गति मांही किया भ्रमन ।१।
हरी ब्रह्मादिक मैने सेया कर्म भंग का कुछ नहिं जतन ॥ २ ॥
अंजन आदिक अधम उभारे धर हिरदे में प्रभुका वचन ॥३॥
तारन तिरन बिडद सुनि जगमें लहा चिमनने चरन शरन।१३।

* पद उपदशी *

टेर—चेतन तीन भुवन सिरदार, तू लाग्यो विषयनकी लार।
चेतन सुन तू सुघट सुज्ञानी, सतगुरुकी तैने सीख न मानी ।
यासे होगइ तेरी हानी अब तू निज कल्यान विचार ।१। चे०
मूरत रूप कुछ नाहिं तेरै कर्म वंध से कीने फेरै ।
तुम गुण कर्मन दावे सगरे इन दुष्टन को वेग उतार ॥२॥ चे०
ज्ञाना वरणा दिक सब परदे इनकूं शीघ्र दूर तू करदे ।
सीख सुगुरुकी धरले हिरदे रत्न त्रय निज उरमें धार ।३। चेत०
आतमराम प्रगट जब होवे सुख दुख तोकूं वोवे ।
हँसे नहीं और ना तू रोवे जगसे कछु नहि नेह लगारे ।४। चे०
जप तप की तुम रेल बनावो ज्ञानचंदको गार्ड बिठावो ।
नमोकारकी सीटी लगावो शील सिगनेलर है तैयार ।५। चे०

तामें चेतन जाय मुसाफिर परभवका तब तोषा हाजिर ।
दो इक स्टेशन होय चिमन फिर पहुंच जाय शिव नगर
मझार ॥ १४ ॥ चेतन०

* पद हजूरी *

टेर—मोय त्यारो संभालो स्वामी आप सम जग पालना
दुःख सुख कर कहते हैं तोकूं आगम की साख प्रमान ।
राग रु द्वेषको लेशभी नाहिं सहू न ज्ञानकी खान ॥
मुझ दीन को उबार भव से लगादे पार ।
मम कर्म शत्रु टार जिनका है मुझ पै भार ॥
जिन वर देव तु है सुखिया मैं हूं दुखिया भव के दुःख क्षय
कर जिनदेव ।
मैं अज्ञानी तुम प्रभु ज्ञानी जिन मत मुझ को कर जिनदेव ।
मैं भववासी तुम भवनाशी निज सम मुझको कर जिनदेव ।
सूख रहा यह चमन कोमका इसको ताजा कर जिनदेव ।१५।

* पद हजूरी *

टेर—पतित उधारन हार सुन प्रभू सेवग अरजी कररहा ।
तुम पद प्रभू हम परसै नाहिं तुम गुण सुन हम हरषे नाहिं ॥
शिवतिय महिमा लखि नाहिं तरसै निसदिन दुर्मति घररहा ।१।
मिथ्योपदेश भी मैने दीया मैने ही जीवों को बहकादीया ।
मैंने ऐसे अनर्थ कीये जिससे मेरा जीया अब डररहा ।२। प०
धर्म के दश अंग तुमने कहे तिनके सदा हम द्वेषी रहे ।
दुःख नदी में योंही बहे मैं पाप की आगमें जल रहा ।३। प०

बाल विवाह का प्रचार कीया कन्या विक्री का कार कीया।
विधवा जिससे लाखों भई तिनका अधम मशिर रहा।४। प०
अब प्रभु शरणा मैं तेरा लिया तेरे ही पद का मैं चेरा भया।
भक्त चिमन अब तज सब आशा तेरे ही दरपे मैं पड़रहा
पतित० ॥ १६ ॥

* इति पद उपदेशी *

टेर—भला मत निरखो नार पराई।
वेद पुराण किताब कहत है जानै लोग लुगाई।
राजा दंडै दुर्गति जावे हो जगमें लघुताई कोई ना होत सहाई।
काल लटीकी गहणा वाड़ी अंतर गंध लगाई।
परजन मोहन जाल बनाकर गज दंती ज्यू चलाई।
लखै दुनियां घबराई ॥ २ ॥ मतनि०
पर नारी तज विषय छोड़दे जीव दया चित लाई।
सत गुरु संग गुणीजन सेवा विनय करो सुखदाई।
जो जिन शासन गाई ॥ ३ ॥ मत०
पर नारी विष बेल धुरी शित स्पर्शन ज्ञान हराई।
खूब चिमन देखा इस जगमें तजो जब होगी भलाई ॥
मत निरखो नार पराई ॥ १७ ॥

* पद हजूरी *

टेर—मैं मनाइ आई पति कूं ना मानैरै मेरी प्यारी सखी
मोरी स्याणी सखी कहलायदो हांरे कहलायदो
पतिको नामानैरै।
केई भव से संग रहीथी जब तो ना बदले तन मनसौ ॥ १ ॥

जगमें मशहूर है बालब्रह्मचारी अब क्यों रमे शिव रामासे ॥१॥
विना कसूर छोडगये मुझ को सुणि पशुध्वनिगये वनमें ॥२॥
ऐसे पती तज और ना गहूंगी नहिं छोडूं निज व्रतको ॥३॥
नामा० झूठा चिमन खलिया ॥ १८ ॥

टेर—सखी वो नेम जगतारी मेरी आंखों का तारा है ।
उन्हीं की याद में गाफिल सदा यह दिल हमारा है
गये वो छोड़कर मुझ को भुलाया दिल से है मुझको ।
परी है चाह अब मुझको मेरा वोही पियारा है ॥ १ ॥
नहीं तकसीर मैंने की क्यों नाहिं राय संयम ली ।
मुझे नहिं चैन अै आली किया उन्ने किनारा है ॥ २ ॥
न भाती जिन्दगानी है उन्हीं की याद आती है ।
न कोई मेरा नाती है फ़कत उनका सहारा है ॥ ३ ॥
अगर शिव नारको चाहते वृथा ब्रह्मचारी कहलाते ।
मुझे संग क्यों न लेजाते चिमन यह सब असारा है ॥१६॥

* पद *

टेर—तुम होजाना हुशियार ओ सिगरेट के पीनेवाले ।
यह स्याह कलेजा करता अरु श्वास रोग कू भरता ।
यह आंखें अंधी करता रे पिडरो के पीनेवाले ॥ १ ॥ तुमहो०
यह चीण वीर्य है करता अरु देहकांति को हरता ।
तू नाहक दम क्यों भरता वोरे चुरटबाज़ मतवाले ॥ २ ॥
यामें जीव अनंता मरते सद्गुरु की लाज न करते ।
तुम नहीं कुगति से डरते ओ सिगरेट के पीनेवाले ॥३॥

तू रुपिया नाहक खोता अरु धर्म कर्म सब धोता ।
जिससे देश दरिद्री होता वो तू हालत क्यों न सँभाले ॥४॥
अब बिगडी बात सुधारो यह चिमन सीख उर धारो ।
क्यों नाहक जन्म बिगाडो रेओ मुख में धूंआवाले ॥ २० ॥

* पद हजूरी *

टेर—करूं परमेष्टि पद नमैनमन । जिससे कर्मरिपूनका
होत शमन ।
इनके नाम जपत योगीजन पावैं शिवपुरवृहत्सदन ॥ १ ॥
अर्हंत सिद्ध शूरी अध्यापक साधुन का ज्यो करे भजन ।
कर्मकाष्ट ले सब योगीजन नाम मंत्र से करै हवन ॥२॥
जब योगीजन कर्म भस्म कर साधै जल्दी तीनू करण ।
केवल पाय अघाति नाशका त्याग जगत लह सिद्धशरण ।२
इन सम मंगल उत्तम शरणा नाहिं जगमें कोई दूजा जतन ।
यातैं शरणा लहा तुम पद का मेटो चिमन का दुर्गति
भ्रमन ॥२१॥ परमेष्टि पद नमै नमन

* पद उपदेशी *

टेर—कजा आरही नादान तू तो लगरह्या खोटे चालै ।
तैंने नरभव दुर्लभ पाया अरु भरत क्षेत्र में आया ।
तू तो श्रावक भी कहलाया अब तू क्यों नहि संयम पालै ।१।
तैंने जन्म अकारथ खोया तैंने बीज पाप का बोया ।
तू तो मोह निद्रा में सोया अब तो चेत चेत मतवाले ॥२॥
चौरासी लख में भटका अब पोपै आके अटका ।
ज्यो पोलाने में ठिठका तो पड़जावेंगे लालै ॥ ३ ॥

इस भवसागर के मांही तैने नरभव नवका पाई ।
चल बैठो चेतन राई अरे शिवके जानेवाले ॥ ४ ॥ कजा०
जिन वाणी उरमें धारो अब तू भरले पुण्य पिटारो ।
भव भवकी फेरी टारो प्रभु भजन चिमन तू गाले ।२२। कजा०

* पद हजूरी *

टेर—कीज्यो गुरवाणि मोरी सहाय माता जिन वाणी माहराणी ।

अरिहत मुख से तू निकली है स्याद्वाद मयै वानी ।
आतमध्यानि तोकूं ध्यावै पावै शिवातियराणी ॥ १ ॥ माता०
सप्त तत्व को तैं दरशाया सबका भ्रमन मिटाया ।
लोकालोक स्वरूप बताया भवि जन आनंद पाया ॥ २ ॥
पूर्वा पर में भेद नहीं कुछ हेतन कोउ बाधै ।
नैगम संग्रह आदिक नयसे द्रव्यों के सब साधै ॥३॥ माता०
द्वादशांग में गणधर गुरने मुनि जन को सिखलाई ।
राग द्वेष तज देखे तोकों उनही के मन भाई ॥४॥ माता०
जीव अनंता भवदधि त्यारे अविचल सुख सब पाया ।
चिमन सदा यह सेवग तेरा तव गुण निश दिन गाया
॥ २३ ॥ माता जिन वाणी ।

* पद *

टेर—सब विघ्न विनाशक ज्ञानप्रकाशक श्रीजिन राज हो ।
स० वि० ज्ञा० श्री० सुख हो विन राग द्वेष हे भगवान
आप पूज्य हो ।

देव लोक में मनुष्य थोक में नाम आपका सुमरण हो ।
मुनिजन सारे तुमकूं धावे । भवहर सुखकर शिवधर बलधर
गुणधर जिनवर प्रभुवर चिमन सहायक हो ॥२४॥ सव०

* पद हजूरी *

टेर—आवो २ चलें जिन पूजन को जिनवरके चलो पद
वन्दन को ।
गंगादि नीर से भरी हैं हेमझारियां कुंकुमादि गंध से भरी
थालियां ॥ १ ॥ आवो० ॥
लेके अखंड शाली स्वेत पूर्ण थालियां । चंपा गुलाब
केतकी की लेके डालियां ॥ २ ॥ आवो० ॥
नैवेद्य गुंजा फेनी घेवर आदि रस भरे कार पूर धूप रत्न
आदि दीपक धरै ॥ ३ ॥ आवो० ॥
दशांग धूप खेवते ही कर्म सब झरै मात लिंग श्रीफलादि
पक्का फल भरै ॥ ४ ॥ आवो० ॥
इनका बनाय अर्घ प्रभू चरण में धरै होवे चिमन भी पार
मुक्ति नार को वरै ॥ २५ ॥ आवो० ॥

* पद *

टेर—तारो तारो स्वामी तिहारे चरण वार वार पूजै । हम
गावें गुणमाला ।
कर्म से हम पूर्ण दुखी स्वामी दुख टारो फिरते हैं मोह वश
संसारी कई बार देखे कर्मोंके खेल । आया चमन जिनवर
शरन । शिव पहोंचाने वाले तत्व ज्ञानी परमातम हो स्वामी ।
तिहारे चरण वार २ पूजै ॥ २६ ॥

* पद *

टेर—चेत चेत के चलो मुसाफिर क्या फिरता तू भूला है।
काल सदा शिर ऊपर नाचत नाहि हो हुकम अदूला है।
गर्भवास कूं याद करो तुम नित उत्कृष्ट कबूला है ॥ १ ॥
मात पिता सुत वनिता भाई सर्व तरह अनुकूला है।
अंत समय कोई काम न आवे क्या नर फिरता फूला है ॥२॥
अनादि काल से भव दाधे भटकत इधर उधर तू भूला है।
इस सागर से पार उतरना स्थंभ धर्म गहो थूला है ॥ ३ ॥
श्री जिन गुन जप निशवासर यही सौख्य का मूला है।
सार चिमन में धर्म जिनेश्वर भजिये भवदाधि कूला है ॥
॥ २७ ॥ चेत चेत के चलो०

* पद *

टेर—जिन पति यदु नाथ सुनो दास की हालत।
पापी हूं मुझे अरज करत आती है खिजालत।
क़ैदी की तरह उम्र कटी मोह के वश में। पाबंद किया लोभ ने बेदाना कफ़स में। हर एक घड़ी गुजरी है दुनियां की हविस में। एक दिन भी न पाया धरम का माह वरस में ॥ १ ॥
माता पिता बंधु का नहीं है सहारा। भूख प्यास की खबर न लीनी जाहारा। चहूं गति के माहि किया भ्रमण अपारा। लेश नाहि सुखका जहां सर्व वस्तु अंगारा ॥ २ ॥
मनः पर्य्याय जन्म से लहा है आपने। उपकार किया जीवों का दरपेश आपने। मैं दीन हूं मंदमती तुम तारक दुनियां। शरण लहा चिमन ने मिटाओ दुर्गतियां ॥३॥ इति ॥२८॥

टेर—छोड़ कर मुझको अकेली राह में । चलदिये वो नेम
किसकी चाह में ।
ऐ सखी प्यारी मेरी मुझ को जता । क्यों लिया है जोग
उन्ने सच बता ॥ १ ॥
क्या हुई तकसीर मेरे ऐ सनम इस तरह देते हो ज्यो रंजो
अलम ॥ २ ॥
था तुम्हें मंजूर जो येही पिया । तो मुझे नाहक को रुस्वा
क्यों किया ॥ ३ ॥
ब्रह्मचारी जन्मसे तुम हो मशूर फिर अरूप से नेह लगाना
क्या ज़रूर ॥ ४ ॥
माफ अब तकसीर मेरी तुम करो संगमें अपने ही चरण
के लेचलो ॥ ५ ॥
दिल में आती है चिमन कूं मैं तजूं नाम अपने प्राण प्यारे
का भजूं ॥ २६ ॥

* पद *

टेर—आया आया प्रभूजी मैं तोरी शरण ।
कर्मों ने घेरा भव दधि में गेरा चहुंगति मांही किया भ्रमण
देवे दुःख मुझे अति हरदम प्रतिपर्याय किया रुदन ॥ १ ॥
च्यार कषाय चोर अति भारी ज्ञान द्रव्य का किया हरण ।
जगत प्रसिद्ध नाम था मेरा दुःख से होता उदर भरण ॥ २ ॥
अन्य देव ऐसा नहीं देखा हरे जीवका जन्म मरण ।
यातें शरण चिमन तुम पद के हरगति में मिले तुमरे चरण ॥
आया आया प्रभुजी तोरी शरण ॥ ३० ॥

* पद *

टेर—सुनो विनती यह राह में संग लेके जाई ।
जब ते जनम जगतमें लीनो कीनो पाप अथाई । लंपट कुटल क्रूर चलकामी खूब करी जडताई । नाम तुमरो विसराई ॥१॥
हरिहर ब्रह्मादि कभी से ये नाहि देखी प्रभुताई । रागी द्वेषी मोही दंभी करै सब लोक हसाई । शरम कुछभी नहिं आई ।२।
दोष रहित सर्वज्ञ दयानिधि सब मूर्छा छिटकाई । काम क्रोध रिपु त्वशा में जीते एही ईश्वरताई । भक्ति हम छोडी पराई ।३।
तुम समदेव नहि है जगमें तिन में दिल ठहराई । तुमरी महिमा व्याप्त चमन में देखत मन हरपाई । निश्चय मन लाई ॥ ३१ ॥ सुनो विनती० ॥

* पद *

टेर—मेरा आज तक प्रभो करुणापते तेरे चरणों में जियरा गयाही नहीं । मैं तो मोह की नींद में सोता रहा मुझे तत्वों का दर्श भयाहि नहीं ।
मैंने आतम बुद्धि विसार दई । मैंने ज्ञान की ज्योति बिगार लई । मुझे कर्मों ने योंहि फंसा तो लिया । तेरे चरणों तक आने दिया ही नहीं ॥ १ ॥
नरकों में ज्यो दुःख मैंने सहे । नहि जाय प्रभो अब मूंहसे कहे । केई छेदन भेदन सहना पड़ा मुझे खाने को अन्न मिला ही नहीं ॥ २ ॥
पशुओं में जाके जो पैदा हुआ मुझे और भी दुःख जिया हुआ । मुझे मांस के भक्षी ने आके हता । मेरा दुःख का तो ध्यान किया ही नहीं ॥ ३ ॥

स्वर्ग में जाके जो देव हुवा। मेरे दुःख का तो वहां भी न छेव हुवा मैं तो आयू को योंही गमाता रहा मैंनें संयम भार लिया ही नहीं ॥ ४ ॥ मेरा आ० ॥

नर भव दुर्लभ मैंने लहा। मैं तो विषयों में निशदिन लिप्त रहा। मात पिता तिय परिजन मुझे चैन तो लेने दिया ही नहीं ॥ ५ ॥ मेरा आ० ॥

मैंने जीवों का नाहक घात किया मैंने छलकर परधन लूट लिया मेरी और की नार पै चाह रही मैंने सत्य तो भाषण कियाही नहीं ॥ ६ ॥ मेरा आ० ॥

मैं तो परिग्रह की नींद में लोट रहा मैंने जप तप क्लेश को नांहि सहा। क्रोध की ज्वाला में भस्म हुवा मैंने शांति सुधा तो पिया ही नहीं ॥ ७ ॥ मेरा० ॥

जिनवर प्रभू अब कीजे दया मेरे पापों से डरता है मेरा जिया। पड़ा चरणों में तेरे ये दास चमन मैंने और ठिकाना लिया ही नहीं। मेरा आज तक प्रभो करुणा पते तेरे चरणों ॥ ३२ ॥ मेरा० ॥

* पद *

टेर—पतित उधारक शिव सुख कारक स्वामी करुणा लीजै।
हम भ्रमत चतुर्गति हारे नहीं तुम बिन कोऊ दुःख टारे।
करुणा सागर सब गुण आगर भव दधि पार करीजे ॥
मेरी ओ कहत साली सब हमी को आसताती हैं।
बलायें ज्यो कि हैं सारी हमी को आ दबाती हैं ॥
कषायें फूट नादारी सदा इसको जलाती हैं।
नहीं अब यह रहा भारत जो इतिहासें जताती हैं ॥

यह भारतवर्ष हमारा। सहे दुःख अनेक प्रकारा। यह भारत नैइया पार लगैया करुणा कर सुख दीजे ॥१॥ पतित०

कला कौशल हम पास बैठाये हैं मूल अर्से से।
उठी तत्वों की चर्चा शोक भारत के मदर्से से॥
ज्यो था दुनिया का शित्तक वह ख्वारी है अविद्या वश से।
निकलते हैं सहस्रों दास वन वन के मदर्से से॥

हम ज्ञान बुद्धि कर हीना। परबंध नफस भये लीना। यह कुमति हमारीन से दुखारी। सुमति ज्ञान अब दीजे॥२॥

गंवां के व्यर्थ व्यय में सब रुप्या हो बैठे हैं खाली।
मिटाया धर्म सब अपना विदेशी चीनि खाडाली॥
स्वदेशी को घृणा से देख अपनी खाक करडाली।
प्रभो हम पै करो करुणा किये की हम सजा पाली॥

हम बैर विरोध मिटावैं। निज भारत देश जगावैं। यह चिमन हमारा करै पुकारा। भारतकी सुद लीजे।२३। पतित०



॥ ॐनमःसिद्धेभ्यः ॥

द्वितीय भाग

श्री मज्जिनेंद्रं प्रणिपत्य सम्यक् । भव्योपकाराय कृतप्रयासः ॥
श्री मज्जिनेन्द्रस्तवनावलींहि । वक्ष्येमहत्पुण्य विवर्द्धनींहु ।१।

अर्थ—मैं श्रीमज्जिनेंद्रकूं मन वचन तन सैं नमस्कार करि भव्यजीवोंके उपकार निमित्त प्रयास करि अति पुण्य बधानेवाली भगवत की स्तवनावली कहताहूं ।

* राग कल्याण *

टेर—मैडा दिल लागा प्रभु चरणां नाल ।
अधम उधारक विड़द तुमारा सो पालो जग पाल ।
अंजन आदिक अधम उधारे अशुभ दिए सब टाल । मैडा०।१।
भवसागर में भ्रमतां २ गयाजी अनंता काल ।
पुन्य उदयकर नर भव पायो अवतो करिए सम्हाल । मैडा०।२।
इन्द्रादिक शिवपदवीदायक प्रभु तुमरी गुणमाल ।
यातैं शरण चिमन तुम पदके मेटो जग जंजाल । मैडा०।३। इति

* राग एमन *

टेर—मेटो जिन स्वामी मेरी दुर्भव पीर ।
इस भव चहुं गति दुख ज्यौं पायो जानत हो बलवीर । मेटो ।१।
सुत दारादिक सुखके साथी चाहैं धनमें सीर ।
विपति परे कोई काम न आवै नहिं पावै कोई नीर । मेटो० ।२।
तुम अनंत चतुष्टय स्वामी तुम हो नायक धीर ।
यातैं शरण चिमन तुम पदके वेग हरो भव पीर । मेटो० ॥३॥

* राग काफी *

टेर—विघ्न विनायक तुमहो जिनेशा ।

परम पुरुष तुम बुद्ध चिदातम तुमही ब्रह्मा विष्णु महेशा ॥१॥ मुनिजन तुमरो ध्यान धरत हैं नाशक लखि निज कर्म अशेषाः । तुम अनंत निजज्ञान दृष्टिकरि जानत हो सब वस्तु विशेषा ॥ २ ॥ तुम जस शशि सम नित प्रति गावैं नृप खग सुरवर नाग सुरेशा कृपा । करो प्रभु दास चिमन पर पार करो भवदधि सै जिनेशा ॥ ३ ॥ इति ॥

टेर—प्रभु तेरी छवी पर वारी जांउं हो जिनंदा ।

नाभिराय मरुदेवी के घर अवधि पुरी भयो परम आनंदा ॥१॥ इंद्रादिक मिल मंगल गावैं जय जय जय मरुदेवी के नंदा । तीन जगतके नायक तुमही सब जीवन सुखकंद निकंदा॥२॥ सम वश रण में आय बिराजें ज्यौं तारां बिच राजत चंदा । कृपाकरो प्रभु दास चिमन पर निस दिन राखो तुम चरणन वंदा ॥ ३ ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥

टेर—प्रभु तेरी महिमां कहियन जावै ।

मघवा खग सुर भूपति निश दिन तुम जस मंगल अनुपम गावें ॥ १ ॥ तुम अनंत चतुष्टयस्वामी जगत्रयके तुम ईश कहावें । त्रिवुध रचित समवशृति राजित निज तन द्युति कर सूर्य लजावै ॥२॥ कर्म महारिपु घेर रहे हैं काल अनंत सुं नाच नचावै । चिमन निवारक इनकों नरसो जो तुम चरणन चित्त लगावै ॥ ५ ॥ इति ।

❋ राग ठुमरी ❋

टेर—नेह लागो मेरो स्यामसुन्दरजी सों ॥
आई बसन्त सबही वन फूले इत उत फूले सरसों ।
मैं पीया बिन किस संग झूलूं निकसत प्राण अधरसों ॥
कहो तुम मेरे वरसों ॥ नेह० ॥ १ ॥

फागणमें सब होरीखेले अपनें अपनें घरसूं ।
पिया वैरागी मैं भई योगन-स्वास उडावत तरसूं ॥
चलो मथुराके डगरसूं ॥ नेह० ॥ २ ॥

सखि तू जाय द्वारिका कहियो इतनी अरज मेरी प्रभूसों ।
विरह व्यथासें जीयरा जरत है जबसूं गए तुम घरसों ॥
मैं दर्शन कूं तरसूं ॥ नेह० ॥ ३ ॥

ज्ञान सिंधु तुम नाथ दयानिधि बात करूं नहिं परसों ।
तुमही तारक नाथ चिमनके तारो भव दधि डरसों ॥
कभी चरणन कूं स्परसूं ॥ ४ ॥ नेह ॥ ६ ॥

टेर—जय जय जय श्रीजिनेंद्र चरणकी जय ।
सिद्ध सूर उवझाय साधुकी जय ॥

अष्ट कर्म दूरहोय ज्ञानको शुलाभ होय मन वांछित प्राप्त होय धर्मकी जय ॥ जय जय० ॥ १ ॥ सप्त भी विनाश होय बुद्धिको विकाश होय सप्त तत्व ज्ञान होय मोहकी जय ॥ जय जय० ॥ २ ॥ कर्म शत्रुभंग होय सहज सौख्य संग होय कभी चिमनमें नाहिं होय जिनोक्तिकी जय ॥ जय जय० ॥ ३ ॥ इति समाप्त

* राग पीलू का रेखता *

नमोर्हसिद्धसूरीणां सुपाठक सर्वसाधूनां ।
पदाब्जेभ्यस्त्रिशुद्धया मेह्यतुल सुखमोक्षदातृभ्यः ॥ १ ॥
भवार्जित कर्मशांतौ यन्मयाप्तं मानवंजन्मा ।
तिपुण्याज्जैनधम्मोंपि भवाब्धेस्तारणे हेतु ॥ नमो० ॥ २ ॥
प्रभवात्तस्य सद्बुद्धिस्ततः सत्संगतिश्चापि ।
मते जैनेप्रतीतिर्मे भवभ्रमदुःखर्ददघ्नी ॥ नमो० ॥ ३ ॥
जयत्व ज्ञानातिमिरघनःप्रभाचकरसत्सभेयंवे ।
यतो मोहादिशत्रूणामभावेसन्नृणां बुद्धिः ॥ नमो ॥ ४ ॥
त्रिमत्रक्केनक्लसेयं शुभश्रेयो निमित्तेयं ।
फलं याचेसदा भक्तिः पदाब्जेर्हदादीनां ॥ नमो ॥ ८ ॥

* राग झंझोटी जंगला *

टेर—तारक सुनी है कीर्त्ति तेरीशरण हूं जिनेद्र ।
रक्षाकरो मेरी नाथ और शक्तना जिनेंद्र ॥
मेरा नहीं है कोइ रक्षक तीन लोक में ।
तू ही है सब जगत का मदद गारहे जिनेंद्र ॥ तार० ॥१॥
सुना नहीं ज्यो नामतेरातातैं लहा ज्यो दुःख ।
मैं जानता था तू और ना जिनेद्र ॥ तारक० ॥ २ ॥
अब ले खबर सिताब दुःखिया बदीनकी ।
फरयाद है तुजीसें हर वार हे दिनेंद्र ॥ तारक० ॥ ३ ॥
तेरे सिवाय देखा नहीं देव तीन लोक में ॥
ज्यों सुन फर्याद मेरी दुःख मेटदे जिनेंद्र ॥ तारक ॥४॥
गफलतसें हुक्म नहीं मानने से ज्यौं हुवा ।
बंदा ज्यो तेरे दरका गुनहगार हे जिनेंद्र ॥ तारक० ॥५॥

करता हूं मैं गुनाहुं का इकरार हरतौर ।
हूं मैं गुनाहमें सरमदार हे जिनेंद्र ॥ तारक० ॥ ६ ॥
करता है आसियों का तुही प्यार जगत में ।
हम आासियों का तुझसें गुफ्तार हे जिनेंद्र ॥ तारक० ॥७॥
सैतान मुजसें करता है तकरार हर तौर ।
इनसें बचाइए मुजे दयाल तुम जिनेंद्र ॥ तारक० ॥८॥
ईश्वर तुम मैं हूं दीन विडद निज सम्हार के ॥
करिये कृपा चिमन पैं सरसब्ज हो जिनेंद्र ॥ तारक ॥ ९ ॥ इति

टेर—दीनबंधु श्रीपते करुणांनिधानजी । सुनकै इक अरज मेरी हुक्म दीजिए सही ।
मालिक हो जिहानके जिनेंद्र आपही ।
हेवो हुनर हमारा तुमसें छुपा नहीं ॥
वे जान मुजपैं बन गया गुना ज्यो इक सही ।
करिये प्रभु माफ मुझे दयाल तुम सही ॥ १ ॥
दुख दर्द दिलका आपसें जिसने कहा सही ।
मुस्किल कूं हरवरसें लीया है भुजागही ॥
कुल वेद वै पुराणमें प्रमाण है ये ही ।
आनंद कंद श्री जिनेंद्र देव हो तुही ॥ २ ॥
कोलूं कहूं प्रभुत्व तेरा मंद बुद्धि मैं सही ।
अनन्त दृष्टि ज्ञान चरण वीर्यधर सही ॥
जिनेंद्र तेरे नामसें गुलजार है चिमन ।
भक्ति पुष्प गन्धलें प्रसन्न है सजन ॥ ३ ॥ दीनबंधु ॥ १० ॥

* चंद्रायणा *

टेर—वंदे श्रीजिन मादिम समव मृति सुंभत् ॥

पुस्कर स्फाटिक व प्रपीठ निकगपिता । पोम्फशभिः तातिः प्रतिवीथिसमाश्रिता ॥ परिहां पुस्कर स्फाटिकरत्न मम पश्रीयुता ॥ समव० ॥ १ ॥ श्रीमंम्फप कांतर मादिम वरपीठिका । शुभवैडूर्य्य जम्फित व सुमंम्फल मंम्फिता ॥ तत्र च सो पृथ मार्ग सुषोडशकांतरा । परिहां दिक्षु च परिपच्चप कल्प न मंडिता ॥ समव० ॥ २ ॥ धर्म चक्र वरतूर्य मुद्वूठं श्रांशुभिः । यत्तक मूर्द्धभिरूद्दसुभाव प्रांशुभिः ॥ पीठमिदं युग पविलसद्रत्नांचितं । परिहां तत्र च वसुविध केतुमाल संशोभितं ॥ ३ ॥ तस्योपरिनातीर्य कपीठ मनूपमं । सर्वरत्न मयमेतदपास्ततमश्रयं ॥ त्रिकमेखलपीठक गंधकुटी म्फिता ॥ परिहां शृंग केतुवर कांचन मौक्तिक जालिता ॥ ४ ॥ तदुपरिरत्न जड़ित हय सिन संज्ञितं । छत्र त्रय युत मीश जगत्त्रय पूजितं वंद श्री जिनपादपद्ममतिनिर्मलं । परिहां मोक्षसुखप्रदमतस्तकेमरिशुतसंचयं ॥५॥ अथमोद्धारक कीर्तिमित्वमिह विसृतं । श्रुत्वा सत्वरमागतोस्मि शरणं तव ॥ रक्षतु दीनदयाल भव भ्रमदुःखितं । परिहां चिमन रक्त मिह श्रीजिन पन्कज पदं ॥ समव० ॥ ११ ॥ इति

* राग काफी *

टेर—सो भव पारकूं जावै । ध्यान तुमही सें लगावै ।

अन्य देवकूं मान त्यजकर भक्त तुमारो कहावे । पांचू इंद्रियमनकूँ वस करि काहूं सै ना ललचावे ॥ निश दिन

प्रभुगुणगावै ॥ ध्यानतु० ॥ १ ॥ ज्यों दृढभक्ति करै प्रभुकी सोही आनंद पावै । क्षुधा तृषादि परीसह वही वाके निकट न आवै ॥ मदत प्रभुकी ज्यों पावै ॥ ध्यान० ॥ २ ॥ ज्यो सुख है दुनियां के मांही उनकी मनमें आवे । देख पराई संपत लोचन लरतर भर आवै । विन संयम नहिं आवै ॥ ध्यान ॥ ३ ॥ शक्रादिक स्वर्गनकेवासी विनयमचहुं गति जावै । यातैं धर्म जिनेश्वर सच्चा गहे ज्यों चिमन बतावै । शीश उनहीं कूँ नवावै ॥ ४ ॥ ध्यान० ॥ १२ ॥

* राग सोरठ *

टेर—देखत जिनेन्द्र मरु देवीलाल । हो अति प्रसन्न झटनायो भाल ।

थेई थेई कर नाचत ईश नालधुमिधुमि किटिवाजत सुताल ।
हो शची साथ चले मंद चाल लटकत कच जैसें काले व्याल॥
वाजत केई बाजे लय सुताल गावत मंगल मिल रागताल ।
सुर नर खग देखत नवै भाल मनमें समाता नाहिं मोदजाल॥
इन्द्राणी जाय प्रसूतिशाल श्रीजिनकूं लेकर लोक पाल ।
चहुं दिश निर्मल वाजे गंधवात वरसत माणक हीरावल ॥
ले इन्द्र प्रभू निज गोद ढाल चढ ऐरावत गए मेरुनाल ।
सन्मेरु सिखर ईशान भाल जहां पाडुकाशिल रहती है लाल॥
तापर सिंहासन रख विशाल स्थापे श्रीजिनकूं अति समाल।
क्षीरो दधि से भर हेम कुंभ निज करमें लिये आई देवमाल॥
सौधर्म इन्द्र कलशन विशेष अघघयध्वनि गरजै मेघ माल ।
इन्द्राणी जिनकी करि परवाल दीए भूषण अंशुक मुकट भाल॥

कुछ कहि न सकें महिमा अपार जिन देखे विनशै पापजाल ।
भवसागर तारक ए दयाल परसर्व चिमन में वृथा जाल ।१२।

* लावणी *

टेर—सुणों नाथ इक अरज हमारी दर्शन मुजकूं देजानां ।
भव भव से मैं संग तुमारी करि निरास अब मत जानां।

इस संसार असार मांही ज्यो तीर्थंकर पदकापानां ।
जीवनके उपकार हेतु प्रभु दया मेरी भी चितलानां ॥ १ ॥
उत्तम कुल में ज्येष्ट कृष्ण ने राज्य लोभ के हेतु करी ।
स्वामी तुमरा विवाह की विधि ऐसी माया रचीखरी ॥ २ ॥
बालापन से ब्रह्मचारी तुम अब क्या दिल में चाह लगी
छांड मुजे शिव रमणीकी प्रभु क्या अरूपसें प्रीतिलगी ।३।
तुम विन शून्य चिमन मोय दीखे मात पिता परिवार सही ।
जब लग मुक्ति मिले नहिं साचित भक्ति चरणकी मिले सही ॥

* पद तमासे की चाल में *

टेर—सुणो तुम नेम नाथ मेरी बात । मेटो भव दधि में
का पात ।

भव भव सैं मैं संग फिरत हूं अब क्यूं तजते साथ ।
पशुवन की तुम दया विचारी मेरी चित्त न लात । ॥ १ ॥
नारायण पद पाय कृष्ण ने राज्य संपदा काज ।
करि तय्यारी व्याव की स कोई बांध्या मृगगणसाज ॥२॥
छपन क्रोड़ यादव संग लेकर आए तोरण पास ।
पशुगण रुदन कराय के मुजको करी निरास ॥ ३ ॥

धिक संसार राज्य और संपत जिस कारण एह भाव ।
द्रव्य विनस्वर सर्व जगत में क्या रंक रु क्या राव ॥ ४ ॥
सर्व अथिर तुम जाणी के चढ गए गढ गिरनार ।
मुजकूं इस संसार में कुछ नहिं प्रीति लगार ॥ ५ ॥
पूर्वोपार्जित निधि फल लहा किसकूं देऊं दोष ।
त्यागं विसन में जोग धरूंगी भरूं पुरायका कोष॥सुणो०॥१४॥

* हमासे की चाल *

टेर—दर्शन देजाज्यो स्वामीजी अपणी दासीने ।
भव भव से मैं संगहूं करिए जरा विचार ।
विन तकसीर छोडकर मुजकूं क्यों करते निराधार ॥ १ ॥
छपन कोडि जादू संग लेके खूब बनाई बरात ।
पशुवन की तुम दया विचारी मेरी चित्त न लात ॥ २ ॥
राज्यादिक के लोभ सें रच्यो जाल भरपूर ।
मैं नहिं जाणूं उच्च गोत्र में ऐसे नर छल पूर ॥ ३ ॥
धिक है ऐसी बुद्धि कूं नही हिताहित ज्ञान ।
विन पुरायोदय नाहें मिले यह निश्चय चितजान ॥ ४ ॥
बालापन सें ब्रह्मचारि तुम सर्वजगत विख्यात ।
छांडि मुजे शिवरमणी चाहो दुनियां करती बात ॥ ५ ॥
कर्मों का फल भोग स्यूं सुणो हमारे नाथ ।
सर्व विसन त्याजि जोगधरूंगी लीज्यो मुजकूं साथ ॥१५॥

* रेखता *

टेर—जहां जादूराय सुनपाए चलो सखी आज वा वनमें
साथ नव जन्मका छोडा दया नहीं लाए निज तनमें ।
विना तकसीर तोरणसें चले पशु शोर सुण वनमें ॥१॥

विना उसनाथ के देखें विरहकी दोंलगी तनमें ॥
सुभावें वो प्रभु मेरा जिनोसें लोलगी मनमें ॥ जहां ॥ २ ॥
करी बदनाम मुजकूं सब नगर बाजार गलियन में ।
खड़ी राजिल रही देखो गए तजिकें प्रभु वन में ॥ ३ ॥
किया जो कर्म फल उसका लगा नाहिं कहसकूं छिन में ।
चलो सखि माफ करवावें पढूंगी स्याम चरणन में ॥ ४ ॥
सखी ये बालब्रह्मचारी कहे नर नारि नगरनमें ।
चिमन सब त्याग जोगन मैं बनूंगी जाय मधुवनमें ॥१६॥इति

* चंद्रायणा *

टेर—वंदू श्रीजिन राजकूं मन बच तन करिके ।

श्रीजिनराज विमल गुण पूरण खानजी । सर्व सुरासुरखेंद्र नराधिप मानजी ॥ सर्व जगतके तारक दीन दयालजी ॥ परिहां सर्व गुणाकरदो तुम शिव पद दानजी ॥१॥ श्रीमज्जन्म महोत्सव कीनो इंद्रने । मेरु शिखर पर स्नान किया जिन चंद्रने ॥ तांडव नृत्य शृङ्गार किया शचीदेह में । परिहां तुमसे तारक देव न कोई लोकमें ॥ २ ॥ चहुं गतियन के मांहि कोई नहिं पेखिया सर्व जगत के देव देख तृप्त न भया । पुण्य उदय करि गोत्र तीर्थ कृत बालहा ॥ परिहां देखत नाशत कर्म शरण जिनसें लहा ॥ ३ ॥ केई भवसे बिना तुम्हारे बैनके । योग बिना केई दुःख लहे अनमानके ॥ भव भ्रमणसें दुखित होकर आयसें । परिहां करे विनती नाथ चिमन तुम पादसें ॥ ४ ॥ इति ॥ १७ ॥

* दोहा *

श्रीजिन वरके पद कमल वन्दो मन वच काय ॥
जिनकी स्मृति तैं दुख नशै पावै सौख्य अपार ।१८।
अहो २ जिन धर्म ये सर्व जगत में सार ।
जिस प्रभाव सैं सुख लहै भगता पुन्य भंडार ॥ १६॥
भोत जीव जिन धर्म विन भटकत चहुं गति मांहि ।
जन्म जरा मरणादिके दुःख अनेक लहांहि ॥ २० ॥
इस भव सागर डूबते उवरे धर्म सहाय ॥
सो सर्वज्ञ प्रतीत है स्वर्ग मोक्ष सुखदाय ॥ २१ ॥
धर्म विना इस जीवके नहिं कोइ अन्य सहाय ॥
मात पिता सुत बंधु स्त्री भी सब धनकूं ललचाय ॥२२॥
जैन धर्म धर्मी सदा अमर रहो निःशंक ॥
जिन भाषित इस चिमनमें अनुपम और अकलंक ॥२३॥

* राग गोरी *

टेर—बतावो सखी कोन दिशा गिरनारी ।
समुद्र विजय सुत मुज अवलाकूं छांडि गए मज धारी ।
उनकूँ देखन जाउं सखीरी मैं उनकी बलहारी ॥ १ ॥
नव भवसैं मैं दासी उनकी विन अपराध विसारी ।
बाल ब्रह्मचारी तुम होकर मुक्ति रमासें प्रीति विचारी ॥२॥
ब्याहन आए सब मन भाए सुणा पशुवन किलकारी ।
जाणि असार जगतको प्रभुने सबसें प्रीति विसारी ॥ ३ ॥
त्यागि परिग्रह सर्व जिनूने तत्क्षण दीक्षाधारी ।
मैं अनाथ सब छोड़ चिमनकूं योग धरूं सुखकारी ॥२४॥ इति

* राग जंगला भोपाली *

टेर—गिरनारि पै गया सुना ज्यों मुजकों दे दगा ।
श्याम पीवसे अतीव दिल मेरा लगा ॥
बलि भद्र कृष्ण आदि सर्व साथले सगा ॥
शक्र ऐंद नाग यक्ष साथ सुर खगा ॥ गिर० ॥ १ ॥
पशुवनका शोर सुनत ज्ञान दिल जगा ॥
छांडिके चले मुझे वृथा दिया दगा ॥ गिर० ॥ २ ॥
जगत मशूर ब्रह्मचारी अबही क्या पगा ॥
वे कसूर त्यज मुजे शिव रमासें दिल लगा ॥ गिर० ॥ ३ ॥
पिया विना त्रिलोक में कोई नहीं सगा ॥
देखा चिमनकूं खूब सर्व ही मिले ठिगा ॥ ४ ॥ इति ॥ २५ ॥

* राग सोरठ मल्लार *

टेर—दर्शन दीजे प्राण प्यारे ज्यूं चरण गहूं मैं थारे ।
सोरठ देश पुनीत सुहावन फूलत वृक्ष लतारे ॥
भूषण त्यजकर भजन करूंगी साथरहूं प्रभुदेना सहारे ॥ १ ॥
तुमरा स्मरण किया जिस जिसनें उनके कारज सारे ॥
अधम उधारक कीर्ति तिहारी सुनि जिया अति हरषारे ॥ २ ॥
नव भवसें दासी मैं तुमरी सो अब क्यूं विसरारे ॥
मैं अनाथ तुम नाथ विना प्रभु दया जरा चितलारे ॥ ३ ॥
यदु कुल भूषण जंतु दया निधि मेरे प्राण सखारे ॥
तुम विन स्वांमी नाहिं चिमन में अपनें साथलगारे ॥ ४ ॥

※ राग काफी ※

टेर—लीज्यो नाथ उबारी मैं दुखिया अति भारी ॥
अगम अगाध थाह नहीं याको ऐसा भवदधि भारी ॥
ता विच नइयां डोलन लागी को गहै बांह उबारी ॥
फस रह्यो मोहमें भारी ॥ मैं दुखिया० ॥ १ ॥
नहिं वल्ली नहिं खेवन हारा चहुंदिश चलती व्यारी ॥
इत उत डोलत फसत भ्रमणा में किस विध होय उबारी ॥
भरे लोचन जल भारी ॥ मैं दुखिया० ॥ २ ॥
तुम बिन और सहाय न जगमें देख लीया संसारी ॥
तुमरी कृपासैं सौख्य चिमन में पावत सब नरनारी ॥
जय बोलै देतारी ॥ ३ ॥ मैं दुखिया ॥ २७ ॥ इति

※ राग भैरवी ※

टेर—किस कारण रूठ चलेहो मेरे सनम
नव भव से मैं संग रही थी इसमें कुछ न भरम ॥
विन अपराध छोड दई मुजकौं मेरी किसकूँ सरम ॥ १ ॥
पशुवनका तुम कीना बहाना ए नहिं तुमरा धर्म ॥
तीन ज्ञान युत क्या नहिं जाना निज भाईके करम ॥ २ ॥
तुम दयाल मैं दुखिया अतिही मेरी उमर है नरम ॥
तुम विन अन्य पितृ मातृसम, लगत आग्नि ज्यूँ गरम ॥ ३ ॥
तुमहो ज्ञानी मैं अज्ञानी स्त्रीलिङ्ग दुःख परम ॥
कटै लिङ्ग ए करिए कृपा प्रभु रखिए चिमन में शरम ॥ ४ ॥
किसकार० ॥ ४ ॥ इति ॥ २८ ॥

* गजल *

टेर—पति तुमही सुनलेना दिलसें सवाल मेरा।

इक सारसे में बासी तुम्हीं प्यारे। जनके सुख देखके दुखिया नीं कमाल मेरा ॥ पति० ॥ १ ॥ अबही क्या कसूर मुजसे फरमाइए जरा ॥ वरने होगा दुनियां में फजीता कमाल मेरा ॥ पति० ॥ २ ॥ सुणां इकबाल तारके दुनियां में मशहूर मेरे ॥ महरुम रहे क्या जानेंगे कमाल तेरा ॥ पति० ॥ ३ ॥ क्या पशुवन सें अधम समझो मुजको संघारे ॥ जन्मसे ज्ञानी प्रभू न जानते हाल मेरा ॥ पति० ॥ ४ काहे कूँ चढाया धनुष व बजाया शंख तुमने ॥ जिस सें हुवा विरह एकमाल तेरा ॥ पति० ॥ ५ ॥ मेरीसी निमन में नहीं अनाथ वालारे ॥ रखिए चरणन में करिके खयाल मेरा ॥ पति० ॥ ६ ॥ इति ॥ २६

* राग पहाडी *

टेर—बतावो सखी कहीं देखा यदुलाल।

समुद्र विजयके पुत्र अनूपम करिगये दिल में शाल ॥
कहां तक वरणूं रूप पियाको कहती हूं सुण हाल ॥१॥
गोल कपोल अधर बिंबी फल लोचन परम रसाल ॥
शुक नासा भोंह कमाण समह अति सुन्दर है भाल ॥२॥
रत्न मुकट युत शीस लसतहें घूंघर वाले बाल ॥
रत्न जडित कुंडल कर कंकन गल मोतियनकी माल ॥३॥
पग नूपुर मणि खचित बाजते चलत हंस गति चाल ॥
गौर श्याम तन वसन अमोलक कर मेंदी सों लाल ॥४॥

मुख मुसक्यात मनोहर दर्शन बोलत अधिक रसाल ॥
ऐसे पति मुजकों तजि भैणा करगए मुझे बेहाल ॥५॥
कुछ अपराध नहीं सखि मुझमें कर्मोंकी यह चाल ॥
सर्व चिमन मुजको सखी दीखै पिया बिन सर्व जँजाल ॥
बतावो ॥ ६ ॥ इति ॥ ३०॥

* राग बैरवी काफी *

टेर—ऐसी है कोई सखी हमारी प्रभुजी कूं आन मिलावै री।
तन मन धन मैं तिन पर वारूं इकपल निजरां न आवैरी॥
नव भवसू मैं संगरही थी या कोई न सुझावैरी॥ १ ॥
पशुवन रुदन सुनत तोरण सें रथकूं आप फिरावैरी ॥
भूषण बसन मिष्ट भोजन जल मुजकूं कुछ न सुहावैरी ॥२॥
मेरे स्वांमी बाल ब्रह्मचारी पर कीया न सुहावैरी ॥
ये निर्मोही किस विधि सेती मुक्ति रमाकूं रिझावैरी ॥३॥
त्याग चिमन मैं अबना रहूंगी जी मेरा घबरावैरी ॥
ये गुण तेरा कबू न भूलूंगी जो पियकूं दिखलावैरी ॥
ऐसी० ॥ ४ ॥ इति० ॥ ३१ ॥

* राग पहाडी *

टेर—सखी मैं कैसें देखूं श्याम जिनकूं देखत होत कल्याण।
कबकी ठाडी जोऊं राह मैं क्या सुधि भूलगए ॥
या किसीने जादू डारा भूले मोसे काम ॥ सखी० ॥ १ ॥
सुना सखी मेरे ज्येष्ट कृष्णने शक्ति पियाकी लाखि अभिराम॥
करि प्रपंच विवाहका उसने बांधे पशु गणखाम ॥सखी०।२।

उनका शोर सुनत ही प्रभुने त्याग परिग्रह धाम ॥
तोरण से रथ फेर दया निधि वृथा करो बदनाम ॥ ३ ॥
किसको देऊं दोष सखी मैं कर्मोंका सबेह अंजाम ॥
इनके वसमें भव भव भटकत कहिं न लह्यो विश्राम ॥ ४ ॥
इन प्रभुके सम और चिमन मैं कोइन दूजा ठाम ॥
यातैं शरण चहूं प्रभु पदका गाऊं जिन गुण ग्राम ॥ ५ ॥

* चाल तमासाकी *

टेर—त्रिभुवन नाथ मुक्ति दातार, मेरी नइया पार उतार।
तुम प्रभु तीन भुवनके नायक, तुमहो प्रभुजी पूजन लायक ॥
अविचल सुखके तुम हो दायक, हरो कष्ट मम जगदा धार ॥१॥
मैं अनाथ दुखिया संसारी, कर्म शत्रु दुख देवैभारी ॥
शरण लही अब प्रभुमें तुमारी, जन्म मरण दुखदेवो टार ॥२॥
अन्य देवका पूजन कीनां, किंचित् सुख भी नांहीं लीनां ॥
सर्व जगतकूं मैं लखिलीना, तुम बिन भया प्रभु मैं ख्वार ॥३॥
दश लक्षण की ढाल बणावो, सुमति ज्ञानका जिरे पिनावो ॥
रत्न त्रयके सुभट दिलावो, करूं कर्म रिपुसें मैं रार ॥ ४ ॥
जप तपकी मोय राय बतावो, ज्ञानांजनकी रेल बणावो ॥
सुरपुरका मोय टिकट दिलावो, पावै चेतन निज घरद्वार ॥५॥
होय हुकम प्रभुका यह जारी, हो कबूलये अरज हमारी ॥
तुम प्रभु दीननके हितकारी, चिमन पीडित नर करै पुकार
॥ ६ ॥ त्रिभुव० ॥ ३३ ॥ इति

* राग कालंगडा *

टेर—कहीं देखाहो मेरा स्वामी सखी द्योनै बताय ॥कहीं॥
रत्न मुकट जिनके सिर सोहैं कुंडल झलकत नांमी ॥
सांवरी सूरत मोहनी मूरत जगकरि पूजित स्वामी ॥ १ ॥
नव भवसे दासी उनकी जानत अंतर जामी ॥
कर्मोदयसैं विसर गए हैं बृथा भई वदनामी ॥ सखी० ॥२॥
उन विन जन्म बृथा सखी मेरा शिवा देवीका जामी ॥
सुनि पशु शोर त्याग परिग्रह सवही है पद शिव मगगामी ॥३॥
दिन नहिं चैन रैन नहिं निद्रा मैं दुखिया मेरी मामी ॥
त्याग चिमन सब जाउं गिरनारी श्री जिन चरण गृहांमी
॥ ४ ॥ सखी० ॥ ३४ ॥ इति

* राग मलार *

टेर—निस दिन तरसत नयन हमारे तुमरे दरश विन श्री
जिन तरसत ॥
सदा रहत वर्षाऋतु हम घर जबसे नाथ सिधारे ॥
अंजन थिर न रहत नैयनन में कर कपोल भए कारे ॥ १ ॥
कंचुकी चीर सुखत नहीं कवहू मानूं वहत पिनारे ॥
स्थिर नहीं चित्त नैन नहीं निद्रा लखती हरदम तारे ॥ २ ॥
विन अपराध त्यागि हमकों प्रभु नव भव क्योंन चितारे ॥
तीन जगतके नाथ दयानिधि केई अधम उधारे ॥ ३ ॥
तीन ज्ञान श्रुत जन्म तुमारा क्रोधादिक सबटारे ॥
तुम बिन रक्षक नांही चिमन में गहूं शरण पदथारे ॥४॥

* राग कालिंगड़ा *

टेर—भजोरे भाई नेमि प्रभू सुखकंदा ॥
यदु कुल भूषण सब मन मोहन शिवा देवीके नंदा। भजो ॥१॥
पशुवन शोर सुनत प्रभु वनमें काटदिए कृति फंदा ॥
गिरनारी सें मोक्ष पधारे पूजत हैं सुर इन्द्रा ॥ भजो० ॥२॥
नेम प्रभू सम देव न कोई सब देखे मति मन्दा ॥
भवदधिसें मोय पारकरो प्रभु चिमन तिहारा वन्दा ॥३६॥

* राग झिंझोटी *

टेर—मानू पिया तेरी रे हितकी बात।
नव भवसें मैं तुम पद पंकज सुमरतथी दिन रात ॥
अब क्या चूक पड़ी प्रभु मुजमें मनमें ही पछितात ॥ १ ॥
मुज अनाथ कूं छोडि दयानिधि क्या अच्छे कहलात ॥
तुम विन सर्व असार जगतमें वस्त्रमात्र दरशात ॥ २ ॥
अन्य तीर्थ कर भोग देह सुख गही दीक्षा विख्यात ॥
सर्व चिमन तजि जोग धरूंगी चरण शरण गहूं तात ॥३७॥

* राग ठुमरी *

टेर—नहीं विसरत मखी स्यामकी सुरतियां। अहो नेमकी
सुरतियां ॥
हसत दशत द्युति दामिनीसी दमकत चंदसे वदन सें करत
मृदु वतियां ॥ नहीं० ॥ १ ॥ कुंडल झलकत लखि चंद्र
सूर्य भी लजत हलन चलन मंद २ गतियां ॥ नहीं० ॥२॥

यदु कुलेंदु सुत महा शिवादेवी करत रुदन अति कठोर छतियां ॥ नहीं० ॥ ३ ॥ अबतो करिए कृपा मुज बेकरार पर चरण शरण राखित हूं अक्षय सुख तजियां ॥ चहुं दिश संपुल चिमन जिनके प्रभावसैं जिनके दर्शसे मिटत दुःख लातियां ॥ ४ ॥ नहीं० ॥ ३८ ॥ इति

* राग खमाच *

टेर—जाय कहो सखी मेरे सनम सैं मुख दिखला जारे
तेरे दर्शकूं तरसत हैं नयन ।
उन बिन तलफत प्राण हमारे नयनन सैं बहे जलकी धारे ॥
पीर बिरहकी बढ़ी ज्यो तनमें सो प्रभू मिटवा जारे ॥ १ ॥
केई भवसै लागी लगन छूटत नहीं करो क्रोड जतन ॥
झूंटे भए सब कोल वचन वृथा मत तरसा जोरे ॥ २ ॥
यदुकुल भूषण समुद्र विजन सुत तुम जगदुत्तम राजारे ॥
मेरे कुलकी लाज तुम्ही कों सो रखता जारे ॥ जाय० ॥ ३ ॥
इक साडी सैं ढकूं वदन सब छोड उतारौं भूषण वसन ॥
मैं पति कारण होंगी जोगन कुल की लाज जलाजारे ॥ ४ ॥
जो कुछ चूक परीहो मुजमें अब तुम माफ करो यदुनन्दन ॥
तुम बिन फीका लगत चिमन सब मोय साथ गहाजारे ॥ ३६ ॥

* लावणी *

टेर—सखी कैसैं करूं मैं हाय कछु नाह बस मेरो । बिन
देखे मेरे पीव जिगर में महाअंधेरो ॥
ऐसी सुन्दर रूपवान दूजो नाहि हेरो । ज्यो उसकी तसवीर

लिखे सौ कोन चतेरो ॥ सखी कठिन नेमका विरह आन,
मोय घेरो । सगरी रैन तारे गिनते होत सवेरो ॥ सखी०
॥ १ ॥ ज्यो तू मिलावे आन वोह रूप उजेरो । जबलूंगी
बलियां नाम सखी मैं तेरो ॥ ज्यो नाहीं मिलगा पीव
मेरा मनको लुटेरो । तो गिर नारी पैं जाय करोंगी डेरो ॥
सखी० ॥ २ ॥ पुण्य उदय सें नेमनाथ वर मेरो । तीन
जगत के तारक निज भक्तन केरो ॥ नव भवके माहीं
कभी कह्यो न टारो मेरो । विन अपराध त्याग चले सुण्या न
कुछ टेरो ॥ सखी० ॥ ३ ॥ स्त्री विग्रहके मांहि लेश नहिं
सुखकेरो । इसके वश करता जीव भ्रमण चहुं गतिकेरो ॥
अब विरह सह्यो नहिं जाय त्रिमन में पति केरो । स्मरण
करूं दिन रैन सदा तुम पदकेरो ॥ सखी० ॥ ४ ॥ इति

* राग सोरठ *

टेर—दर्शन दीज्ये प्राण प्यारे । अब माफ करो तुम आग
हमारे ॥

समुद्र विजय नृप शिवा देवी राणी घर भये आनंद सारे ॥
हमरे घर प्रभु होय अमंगल क्या अपराध हमारे ॥ दर्श० ॥१॥
केई भवसें संग रहिथी भागे जग सुख सारे ॥
क्यूं संबंध किया प्रभु मुझसें क्यूं मुज छोड पधारे ॥ २ ॥
तुम विन अन्य मनुज है पितूसम इस भव सर्व वृथारे ॥
दीन दयाल जगत पति मेरी दया करो न निहारे ॥ ३ ॥
तुम अनन्त ज्ञानके धारी मानत सुख दुखसारे ॥
सुणत त्रिमन में अन्य तीर्थंकर राज्य भोग व्रतधारे ॥
है प्रसिद्ध संसारे ॥ दर्शन० ४१ ॥ इति

* राग गज़ल *

टेर—नेमनाथ बात सुन टुक दिलमें रहमला । कहती हूं
रोंके झार झार दिलमें रहमला ॥
पशुवनकी सुन पुकार तू गिरनार चलदिया ॥
किया नहीं खयाल मेरा दिलमें रहमला ॥ नेम० ॥ १ ॥
मात तात भ्रात और कुटुंब के सभी ॥
करते हैं मेरे हालपैं अपसोच रहमला ॥ नेम० ॥ २ ॥
मेरा कसूर कुछ नहीं किया था कृष्णनें ॥
बे कसूर छांड के मतजा तू रहमला ॥ नेम० ॥ ३ ॥
ब्याहने कूं मुक्ति नार गिरनार चलदियो ॥
प्रभु आज्ञा मुझे है क्या जरातो रहमला ॥ नेम० ॥४॥
तुमने दीक्षा लेलिई फिर मेरी क्या खबर है ॥
आसरा अगर यहां बतातो रहमला ॥ नेम० ॥ ५ ॥
किये थे पूर्व कर्म मैं उसका फलमिला ॥
मिटाऊं कर्म संग चाल दिलमें रहमला ॥ नेम० ॥ ६ ॥
छांड सब चिमन कूं जंगल में जावसूं ॥
काट जगत फंद कूं मेरे पैं रहमला ॥७॥ ॥ नेम० ॥ ४१॥

* राग रेखता *

टेर—सुणां तारक हो दुनियां के दयानिधि नाथ मैं तुमरा ।
मिटाद्यो दुःख सब मेरे गहामैं शरण पद तुमरा ॥
फिराके तेरे मैं हरदम लबों पर आह जारी है ॥
तिहारी तेग अबरूका जिगर पर जख्म जारी है ॥ १ ॥

जरा दो आपके दर्शन येही उम्मेद सारी है ॥
तुमारे दर्श विन प्यारे अजब हालत हमारी है ॥ २ ॥
तन पर कपडा विपलगे क्षुधा तृपासे देस ॥
सुद्धि बुद्धि कुछ ना रही हास्य कारत सब देस ॥ ३॥
समुद्र विजय शिवा देवीके पुत्र जगद् विख्यात ॥
नव भवसें मैं दास थी बे कसूर त्यज जात ॥ ४ ॥
दीन दयाल तारक जगत पूर्ण ब्रह्म परमेश ॥
तुम चरणन कूं नित नमें ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ ५ ॥
ऐसे पति पाय फेर भ्रमण लोकमें रहा ॥
ताजुब दुनियां में मेरा व बाल होयगा ॥ सुणो० ॥ ६ ॥
देखा चिमन कूं हरतरें कोई नहीं रहा ॥
लाशानी तुम्हे जानके चरण शरण आगहा ॥७॥ १३ ॥

* राग कालिंगडा *

टेर—हो प्रभु मुजे अभय पद देना तारण तरण जिहाज
दया निधि ॥ मुजे०

भव दधिमें है नोका मेरी किस विध पार उतरना ॥
तुम सम तारक और न जगमें अरजी अब सुणलेना ॥ १ ॥
अष्ट कर्मके वशमें होकर भया ज्ञान सें हीनां ॥
तुमसें नायक छोडि प्रभू मैं अन्य देव उरलीना ॥ २ ॥
काल लब्धिसे अब सुधि आई शरण तुमारालीना ॥
करणां होसो करो कृपा निधि चिमन धरै तव सरणा ॥१४॥

* राग काफी *

टेर—लेवो खबर हमारी प्रभु सुधि काहे विसारी ।

तुमरे हेतु जंतु सब त्यारे मात पिताको कहोरे ॥ विन अपराध छांडिगए मुझकूं वृथाभई वदनामी दया मेरी न विचारी ॥ लेवो० ॥ १ ॥ केई भवसैं संगमें रहती करती चर्य्या सारी ॥ अब तकसीर पडी क्या मुजमें त्याग गए मजधारी । हंसै सब ही नर नारी ॥ लेवा० ॥ २ ॥ उत्तम कुलमें जन्म तुमारा सम दर्शी अवतारी ॥ तीर्थं कर पद पाय दयानिधि ऐसी क्या जो विचारी ॥ दिलमें बसी शिवनारी ॥ लेवो० ॥ ॥ ३ ॥ तुमरी भक्ति स्मरण सैं दुनियां कर्मन वश दुखियारी ॥ सहज ही पार उतर गए सबही ऐसी लीला तुमारी ॥ जगत जानत है सारी ॥ लेवो० ॥ ४ ॥ वार वार मैं अरज करत हूं शत्रू दुखदे भारी ॥ कृपा दृष्टि जब होय चिमन पर रहै सर सज्ज तयारी ॥ हर्षित हो नरनारी ॥ ४५ ॥

* पुनः काफी *

टेर—अरज सुनों यदुराई । जिसे स्त्रीलिंग नसाई ॥

केई भवसै दासी तुमरी सेवाकरी चितलाई ॥ कोल वचन सब विसरगए तुम ऐसी क्या निठुराई ॥ दया चित में नहीं आई ॥ अरज० ॥ १ ॥ जबसे जन्म लियो दुनियां में नहि कीन्हो पाप अघाई । श्रीजिन वचन न लंघे कब हूं नहि निंदे मुनिराई ॥ काय स्त्रीकी किम पाई ॥ अरज० ॥ २ ॥ क्या अपराध बतायों मुजसे वृथा व्यथा यह पाई ॥ ज्ञान

दृष्टिसें जानत हो सब प्रभु स्त्री तुमरी कहलाई ॥ वृथा वदनामी पाई ॥ अरज० ॥ ३ ॥ तुम विन अन्य पितृ भ्रातृ सम यह निश्चय चित्त लाई ॥ सर्व चिमन में तारक तुम हो भवदधि पार कराई ॥ जबी तुमरी प्रभुताई ॥ ४६ ॥ इति

* राग काफी *

टेर—लीज्यो नाथ उवारी भई में अति दुखियारी ॥
अगम अगाध थाह नहीं जाको भवदधि ऐसा भारी ॥ ता विच नइयां डोलत लागो को गहे बांह हमारी ॥ फस्यो मोहमें अतिभारी ॥ लीज्यो० ॥ १ ॥ तुम विन हाथ गहे को जगमें हो दुखमें अति आरी ॥ लोग हसत हैं तारीं देदे घावपे लून मिलारीं ॥ सुनों अब टेर हमारी ॥ लीज्यो० ॥ २ ॥ हमनें सुना तुम अतिही दयानिधि साधुन को सुख कारी ॥ दास चिमन में करिये कृपा प्रभु दीज्यो वर शिव नारी ॥ मोन त्यजो मेरी वारी ॥ ३ ॥ लीज्यो० ॥ ४७ ॥ इति

* राग जंगला *

टेर—या सांवरिया की वात सखी मोसै कहिय न जात ॥
समुद्र विजय शिवादेवी के नंदन जगमें है विख्यात ॥
नव भवसे मैं संग फिरत हूं वेकसूर त्यज जात ॥ या० ॥ १ ॥
कृष्ण देख वल मेरो पिया को दिलमें अति घवरात ॥
करि प्रपंच विवाह का वनमें पशुवन रुदन सुणात ॥ २ ॥
प्रभु विन अन्य मनुज भव भवमें हैं भ्राता अरु तात ॥
कुछ अपराध वनो नहीं मुजसें सोचत हूं दिन रात ॥ ३ ॥

पूर्व किये कर्मन के बश जिय सुख दुख भोगत जात ॥
श्रीजिन शरण गहुं मैं चिमन मैं करो कर्मका घात ॥४८॥

* राग खमाच *

टेर—सूरत तेरी कहां दिखलाय गयोरे ।
नव भवसैं मैं संग फिरत हूं दशमें क्यों विसराय गयोरे ॥
छपन क्रोड जादु संगतेरे इनसैं नेह तुडाय गयोरे ॥ १ ॥
तोरण पै प्रभु तुम सजआए झूंटी प्रीति वताय गयोरे ॥
बिन अपराध त्याग प्रभु मुजकों मुक्ति रमा ललचाय रहोरे।
ये संसार नीर बुद्बुदसम ये रचनां दिखलाय गयोरे ॥
त्याग चिमन मैं योग धरूंगी वे योग स्वरूप बताय
गयोरे ॥ ३ ॥ सूरत० ॥ ४९ ॥ इति

* राग होली की चालमें *

टेर—नेमनें मेरी एक न मानी नेमनें ॥
ठाडीथी मैं अपने महलमें पिया दर्शन के लानी ॥
तोरण से रथ फेरचले प्रभु सुन पशुवनकी बानी ॥ मेरी मनमें न आनी ।१। बिन व्यवहार मोक्षमग नाहीं जिन सासन में गानी ॥ और तीर्थंकर भोग जगत् सुख पीछै दीक्षा गहानी सुनी सब लोक कहानी ॥ नेमनै० ॥ २ ॥ जगत प्रसिद्ध बाल ब्रह्मचारी अब क्या चित्तमें ठानी ॥ छांडि मुझे शिव रमणी चाहो जगमें होगी हसानी देखो जादूराय की रानी ॥ नेमने० ॥३॥ चढि गिरनार लई प्रभु दिक्षा मुक्ति पुरीकी निशानी। त्याग विभूति चिमन जब राजल प्रभु पद शीश नमानी ॥ मुजे संग लीज्यो ज्ञानी ॥ ४ ॥ नेमने० ॥ ५० ॥ इति

* राग काफी *

टेर—सांवरो सुखदाई वाकी छवि वरणी न जाई ॥

अश्वसेन वामानदनकी कीरति त्रिभुवन छाई ॥ सम्मेद शिखरगिरि मंडन प्रभुका देख दरश हरषाई ॥ हृदय मेरो हुलसाई ॥ सांवरो० ॥ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रकटे आज आनंद वधाई ॥ तीन भुवनके नायक निरखे प्रकटी पूर्व पुन्याई ॥ सफल मेरो जन्म कहाई ॥ सांवरो० ॥ २ ॥ प्रभुके सरस दरस बिन देखे भव २ भटक्यो भाई ॥ अवतो चरण शरण शिव दायक चिमन कहे गुनगाई ॥ प्रीति जिन चरणों सैं लगाई ॥ ३ ॥ सांवरो० ॥ ५१ ॥ इति

* राग काफी *

टेर—नयना हुलसाई आज जिन मूरति देखी ॥
भव २ संचित पाप कर्म सव देखत दूर नसाई ॥
सुमति विकाशत कुमति विनाशत ज्ञान विमल हुलसाई ॥१॥
वामानंदन छवि अति सुंदर महिमा वरणी न जाई ॥
दीन दयाल कृपा अव कीजै भवभ्रम जाइ नसाई ॥२॥
तुम सम ओर न देव जगत में यह निश्चय मनलाई ॥
यातैं शरण चिमन जिन तेरे भव २ होज्यो सहाई ॥५२॥

* राग काफी *

टेर—होरी खेलिए फेर न ऐसो दाव ॥
अनादि कालसैं भव वन भटकत हरदम रहता भाव ॥
यातैं दुःख सह्यो सो जगमें कह न सकों वह घाव ॥ १ ॥

आज समैं होरीका आया कर्मों का भस्म उड़ाय ॥
दया मिठाई तप बहु मेवा संयम वाकावाव ॥ होरी० ॥ २ ॥
लेश्या मृदंग ताल लोभादिक डफ बाजे शुभ भाव ॥
सुमता केशर घिसकर प्यारे भव्यादिक छिनकाव ॥ ३ ॥
ज्ञान पिचकी पकड करमारो क्रोधादिक कूं भगाव ॥
समकित अवीर उड़ावो भविजन जिसका अतुल प्रभाव ॥ ४ ॥
ऐसा अवसर पाय भव्य जन श्रीजिन के गुणगाव ॥
ऐसी होरी निश्चय खेलै मुक्ति मिलन का दाव ॥ ५३ ॥

* राग टहूल *

टेर—चेतन को आछ्यो दाव लग्यो चेतनको ॥
लख चोरासी में भ्रमतां १ नरभवपायो ज्ञान जग्यो ॥ १ ॥
भक्ति वधावो प्रभु चरणांकी गुरुका वचन सुणो ॥ उमगो
शील पाल संतोष लहो गुण समकित व्रत थे गाढ पगो ॥ २ ॥
जीव दया कीज्यो हितकारी क्रोध मान मद लोभ ठगो
चेत० ॥ ३ ॥ दान शील संतोष क्षमा तप आतम ध्यान
धरो शुभगो ॥ चेत० ॥ ४ ॥ यही तारक जीव चिमन में
स्वर्ग मुक्ति फललो सुभगो ॥ ५ ॥ चेतन० ॥ ५४ ॥

* राग मारंग होली *

टेर—मदछीके मानीजी थे समजो आतम ज्ञानी जी ज्ञानी
जी थे आछ्योजी नरभव अबके पाइयो राज ॥
लख चोरासी योनिमें जी चेतन थिरता कबहु न प्पाय ॥
राग द्वेष वैरी लग्या कोई लिया नाच नचाय ॥ मद० ॥ १ ॥

जीव कर्म संजोग सें जी चेतन वर्ण वर्ण के पाय ॥
जैसे बहु रुप्या वर्णो भिन भिन स्वांग बणाय ॥मद०॥२॥
चहुं दिश बाजी खेलतां जी चेतन बाजी हारां जाय ॥
अबके दाव भलो लग्यो लीज्यो धन अधिकाय ॥ ३ ॥
आया मूठी बांधिके जी चेतन जासी हाथ फुलाय ॥
थे पूंजी ज्यों लाइया सो दिन दिन बीती जाय ॥ ४ ॥
पूर्व पुन्य उदैभयो जी चेतन दुर्लभ नर भवपाय ॥
जैन धर्म पाला सदा ए अवसर बीत्योजाय ॥ मद० ॥ ५ ॥
गुरु उपदेश भलो दियो जी चेतन सांची श्रद्धालाय ॥
कर्म काटी निर्भय त्रिमन निराकार पद पाय ॥५५॥ इति

॥ होली ॥

टेर—होरी तो आई छे शुभ कारी सहेली म्हारी ।
व्याहन आए नेम पीयाजी सब यादव ले लारी ॥
वनडा बनं तोरण पै आए मेरे हर्ष अपारी ॥ सहे०॥१॥
कृपानाथ वै पाछा फिरिया सुनकर जीव पुकारी ॥
मोरमुकट कर कंकन भूषण सब त्यज मोह निवारी ॥ २ ॥
गिरनारी पै होरी मचाई ले सुमती कूं लारी ।
पंच महाव्रतरंग वनायो ज्ञान करी पिचकारी सहे० ॥३॥
बारह भावन साथ सहेली तपहस्ती असवारी ।
केवल ज्ञान सहाय दशों दिश ग्रहण करो शिवनारी ॥४॥
अष्ट कर्म की भसम उडाई चरण अबीर उछारी ।
मोक्ष त्रिमन में जाय विराजे तीन लोक सिरदारी ॥ ५६ ॥

* गणगोर *

टेर—होरे जिनकी पूजा सुखदाई होराज जिनवर वंदवाजादे ।
ये जिन है त्रिभुवन तारक जिन शासन में गाई ॥ होराज० ॥१॥
अनादि काल सै भववन भटकत काललब्धि नहि पाई होराज।
पुन्न उदय सैं नरभव पायो सत संगति भी पाई हो राज ॥२॥
पंचामृत अभिषेक करो नित्य अष्टद्रव्य शुचि लाय ।
करि पूजन स्तुति भाव भक्ति सूं जिम अष्टकर्म जरिजाईहोराज॥
पूजन सम नही पुन्य हेतुपर श्रीगुरु नै फुरमाई ।
ज्यो कोई पूजै प्रभुपद नित्य नर शीघ्र स्वर्ग गति पाई हो राज॥
इस संसार असार मांहि लखि वस्त्र मात्र विनशाई ।
अविनश्वर प्रभु नाम जगत में चिमन भजै चित लाई ॥५७॥

* गणगोर *

टेर—आई छै रंगी गणगोर सहेल्यो म्हारी ।
इस जगत में सब ही नर नारी पूजत है हरगोर ।
मेरे पिया खुदा हरिब्रह्मा हर देखत हूं चहुं ओर॥ सहेल्यो॥१॥
नव भव सै मैं संग रहत थी सब जग में सिर मोर ।
बेतकसीर छोड गए प्रभु मुज कुं यह कर्मन का दोर ॥ २ ॥
सत् भामा नैं जल क्रीडा में बोल्या वचन कठैर ।
धनुष चढाय शंख पूरा प्रभु मचगया पुर में शोर ॥ सहे० ॥३॥
ज्येष्ठ कृष्ण ने मेरे पिया की लखि कर विग्रह जोर ।
करि प्रपंच सखी मेरे पिया कूं लेगए वनकी वोर ॥ ४ ॥
पशुगण वाडे मांही वांधे करवाया अति शोर ।
तत्त्वणही सब छांडि परिग्रह डोही कंकण तोर ॥ सहेल्यो०॥५॥

मैं तोरण पर वाट जोवती लखत रही चहुं वोर ।
सोचत रोवत पूर्ण भई अब मुस्कल से हुवा भोर ॥ ६ ॥
हाल सुणां पति का जव ऐसा दिल में उठत हिलोर ।
कोलू कहों सखी वात पिया की मेरे दिलका चोर ॥ ७ ॥
इन सम देव न देखा जगत में ढूंढा सवही ठोर ।
श्री पति चरण विना जु चिमन में नहीं त्रिभुवन में ठोर ।५८।

टेर—अजी एतो पूज्य पूज्य तम जग करि शिव रसिया
मरु देवीजीरो लाडलो ॥ अजी० ॥

अजी येतो गहरो गहरो जगत उजारो शिवरसिया ।
जिन के जन्म समय से प्रथम ही वरसे रत्न रसमास रसिया ॥
नाभिराय घर जन्म लियो प्रभु त्रिभुवन विस्मयकारी शिव ।२।
इंद्र शची ऐरावत चढकर आये मंगल हेतु रसिया ।
मेरु शिखर लेजाय सुराधिप जात कर्म करि हर्षित रसिया ॥३॥
अवधिपुरी फिर जाय शचीपति जय जय उचारतरसिया ।
तांडव नृत्य किया सुरपति नें हाव भाव रस युत शिव रसिया।४।
देव चतुर्विध वाहन चढकर रूप देख प्रभु तृप्त न रसिया।
विन संस्कार सहज सुगंधित तन गंधित दशों दिश रसिया।५।
वे व्यापक जगतारक महिमां कहन सके सुरगुरु शिव रसिया ।
ऐसे प्रभु के चरण कमलमें चिमन भ्रमर रमता शिव रसिया।५९।

* राग खमाच *

टेर—दर्शन विन जियरा निस दिन तरसत । मोय कल ना
परत मोरी आली पल छिन मन धृति नाधरत दृगजल वरषत।

स्याम सुंदर छवि अति विशाल अनुपम दयाल सबकोरी पशुवन को शोर सुनि चित चोर भयो अति कठोर नर हरे करसत ॥ दर्शन ॥१॥ तुम ने विसारदि ई मैं ना विसरूं उनकी नो सो मैं करहुं मै अनाथ तुम सैं सनाथ प्रभु तुम विन हिरणी मृगविन विचरत ॥ दर्शन ॥ २ ॥ नव भव सेवा व्यर्थ गई तुम त्याजि अन्य न पति मैं करहुं अवतो प्रभु के चरण शरण हैं धन्य चिमन मैं प्रभु पद परसत ।३। दर्शन ।६०।

* रागनी भैरवी *

टेर—लोभ सदा दुख दाई भवि जनलो०

क्रोध दंभ का पिता लोभ है सर्व पाप का मूल जनाई ।
इसके वश कितने नर डूबे सो जिन शासन साख बताई ॥१॥
भक्ष्याभक्ष्य विचार रहित वे अपकीरति उपजाई ।
देह छोड़कर नरक सिधारे कोउ न होत सहाई ॥ लोभ०॥२॥
सत्यघोस इहिं के वश होकर मुष्टिघात अरु गोवर पाई ।
मरकर सर्प भया नृपगृह मैं सोजिन शासनगाई ॥लो० ।३।
लोभी नर सुत पुत्री वेचै करत जीव का घात कराई ।
कोलू कहुं कुचेष्टा यातनकी सुणत चिमनकी माति घवराई ।६१।

* राग काफी *

टेर—प्रभु भजलो दिन जात दिवानें सब तजि दूर वहानोरे ।
पांच सात दस वीस वरस को मांता मनमें जांणोरे ।
काल जन्म सैं सिरपर भंरमैं किस मोह मे भरमानोरे ॥ १ ॥
रमतां वालक उमर गुमाई ज्वानी जोर जमानोरे ।
मद मांतो रमणी वस रातो पापहि पिंड भरानोरे ॥प्रभु० ॥२॥

वय पलटी जब सब जन पलटे स्त्री सुत सीख नमानेंरे ॥
स्वेत भयो शिर बुगला सिरसो काय वचन हैरानेरे ॥ ३ ॥
मनका कहनां तन नहीं माने वैद्य हकीम थकानेरे ॥
सुत दारादिक सुखके साथी दुखमें दूर रवानेरे ॥प्रभु०॥४॥
फूटी पाज रुके जलकैसें अवसरगयें पछतानेरे ॥
अपना हित भी कुछ तू करले जवलग शक्ति गहानेरे ॥ ५ ॥
ए संसार असार सर्वंगा अंजली जल ज्यों नशानेरे ॥
इस से मैं श्रीजिन पद पंकज शरण चिमन चित्त ठानेरे ॥६॥

* राग सोरठ *

टेर—दर्शन दीजे प्राण प्यारे ज्यूं चरण गहूं मैं थांरे ।
सोरठ देश पुनीत सुहावन फूलत वृक्ष लतारे ॥
भूषण त्यज कर भजन करूंगी साथ रहूं ज्यों देवो सहारे ॥१॥
तुमरो भजन किया जिस जनने उनके काज सवारे ॥
अधम उधारक कीर्त्ति तुम्हारी सुणि जिय अति हरषारे ॥२॥
नव भवसें मैं दासी तुमरी अवही क्यूं विसरारे ॥
मैं अनाथ तुम नाथ विनां प्रभु दया त्रिसजगतारे ॥ ३ ॥
यदु कुल भूषण जंतु दयानिधि मेरे प्राण सवारे ॥
स्वांमी विन शरणां न चिमन मैं अपनी साथ लगारे ॥६३॥

* राग रेखता *

टेर—स्टेशन जिस्म है मेरा नफसकी रेल चलती है ॥
पकड सकता नहीं कोई जवी फारम निकलती है ॥
नहीं आता है जब तक तार धुरसे लैन क्लीयरका ॥
करो दिल सडक को तुम साफ जरा फुरसत न मिलती है ॥१॥

टिकट नेकीका है जिस पास वोही अंदर पहुंचता है ॥
विनां उसके वही दुनियां कुगति में हाथ मलती है ॥२॥
करे नेकी अगर ज्यादे तो पावे दरजा अव्वलका ॥
टिकट लेलो अभी कुछ देर है अंजन बदलती है ॥ ३ ॥
बजा करती है सीटी रात दिन या मोतकी लोगो ॥
बदी के वास्ते हरदम पुलिस दरपै टहलती है ॥ ४ ॥
गया बचपन जवानीने वजाई दूसरी घंटी ॥
करो जलदी नहीं तो तीसरी घंटी उछलती है ॥ ५ ॥
उठा असवाब अपना हक्क सनासी का चलो जल्दी ॥
नहीं तो पकडे जावोगे पुलिस उससे न टलती है ॥ ६ ॥
सुणा नहीं हुक्म हाकीम फिर गरूरी द्रव्यकी रखता ॥
पडा करती है हरदम मार सरम उनकूं न आती है ॥ ७॥
हुक्मका खोफ नहीं रखता तमासे सब जगें फिरता ॥
उठाता देखता खाता बुरी आदत न मिटती है ॥ ८ ॥
खडे रहजायँगे चुप चाप फाटिक पर ज्यो ज्यो गाफिल ॥
चले पर रेलके कुछ नहीं चिमनकी पेश चलती है ॥९४॥

* राग कालिंगडा *

टेर—गहो जिन नाम रतन निर्मोल ॥

याके तुल्य न मानक मोती देख तराजू तोल ॥
अन्य उपाय नहीं सुख पावे वृथा न नीर बरोल ॥ १ ॥
प्रभुकी भक्ति परम सुख दायक सूरि बजावत ढोल ॥
जगके राज्य भोग सब झूंटे मिथ्या केलि किलोल ॥ २ ॥

श्रीजिन नाम रत्नकी माला सुमरण कर दिल खोल ॥
मुक्ति मिलनका मार्ग चिमनये पर घर तू मतडोल ॥६५॥

* राग रेखता *

टेर—भजो तुम सर्व दर्शीको भवोदधि पार जाना है ॥
वोही ब्रह्मा हरि हर है वोही बुद्धादि माना है ॥
रहो तुम यादमें उसके जहां तक आबदाना है ॥भजो०॥१॥
खुणो ए ध्यान मन तुमकूं यहां से कूंच करना है ॥
रखो कुछ खोफभी उसका अगर जिन्नतकूं जाना है ॥२॥
करो कुछ गोर तुम दिलमें कहा क्या २ तुमै उसनें ॥
किया था हुक्म जो हकमें उसै तुमसै तुमने न माना है ॥३॥
पडे सोते हो गफलत में जरा तुम आंखकूं खोलो ॥
हुई है स्याम उठ बैठो मुसाफिर घरकूं जाना है ॥ ४ ॥
मुल्कुल मृत्यु आवेगा तुमें इस ज्यासे लेनेकूं ॥
वहानां क्या करोगे तुम वो तुमसें सयाना है ॥भजो०॥५॥
न दोलत काम आवेगी न इस दुनियां से कुछ हांसिल ॥
अगर तुम सोच कर देखो यहां सब छोड जाना है ॥६॥
अरे गाफिल तू भूला है इसही दुनियां के लालच में ॥
येही दुनियां है विजली ज्यो जिनागम में जो गाना है ॥७॥
वोही तारक जगत जगत मांही विरागी निस्पृही रागी ॥
चिमन सुख हेतु दुनिया में न दूजा वो ठिकाना है ॥६६॥

* दोहा इन्द्र सभामें *

*श्रीजिन वरके पद कमल वन्दू मन वच काय ॥
जाके सुमरत दुख टले पावे सौख्य अपार ॥ ६७ ॥

अहो अहो जिन धर्मए सर्व जगत में सार ॥
जिस प्रभाव सें सुख लहै भरिए पुगय भंडार ॥ ६८ ॥
बहुत जंतु जिन धर्म विन भटकें चउ गति मांहि ॥
जन्म जरा मरणादिके दुःख अनेक लहाय ॥ ६९ ॥
इस भव सागर डूबते उबरे धर्म्म सहाय ॥
सो सर्वज्ञ प्रणीत है स्वर्ग मोक्ष सुख दाय ॥ ७० ॥
सर्व देव जगके लखे सर्व धर्म समुदाय ॥
सब अन्योन्य विरुद्ध है चिमन पढा चित्तलाय ॥७१॥

* राग *

टेर—विधि हम हार गए तुम आगे ॥
उद्यम करत न सुख कुछ पायो, फिरे चहुं दिश भागे ॥
रंचहु नहीं अधिकता जामें ज्यों रवराखी आगे ॥ १ ॥
ताके घाट बाध करणे को दोडत ही मनरागै ॥
तुमरो कियो न होत अन्यथा हम तन मन करिलागे ॥२॥
अनतेरू तो तिरे सहजमें तेरू भए अभागे ॥
देत जगाकर धन सोतन को खाली रहत सुभागे ॥३॥
तेरे सिवा शक्ति नहीं जगमें जाकर जासूं मांगे ॥
अबतो लाज चिमनकी तुमको सब पौरुष हम त्यागे ॥७२॥

टेर—जब सैं शरण गही मैं तोरी ॥
निखिल प्रपंच स्वप्नवत् जाणा छूटी तृष्णा मोरी ॥
विविध विषय त्यज प्रभु गुण सुमरत भरो नामधन झोरी ॥१॥

तुम प्रताप चय भानु प्रकाशत त्यागी सब विधि चोरी ॥
यमकी भीति अनीति हरी सब कुल कुवासना छोरी ॥२॥
क्रोध मोह मद सर्व भुलाने मति तुम चरणन वोरी ॥
इत चाह रही नहीं रंचहु आसा पासी तोरी ॥ ३ ॥
हिंसा झूंट चौर्य्य मैथुन सैं ममता सब विधि तोडी ॥
भव असार सार जिन पदमें प्रीति चिमनने जोडी ॥७३॥

टेर—जगत में सो हैं उत्तम संत ॥
ब्रह्मचर्य्य व्रतपाले निस दिन स्त्री सं रहै इकंत ॥
राग द्वेष मद मान लोभ छल क्रोध दीए जिय हंत ॥१॥
धीरज धर्म दया धनजाके जैन जंत्र अर मंत्र ॥
त्याग अशुभ संकोच चित्तको रखै प्रीति भगवंत ॥ २ ॥
सहस्र अठारा भेद शीलके ज्यो जानै जियतंत ॥
व्रत संयम वे पालते पूज्य होय जयवंत ॥ जगत० ॥३॥
पाप रहित शुभ मार्ग में चलते खुद गुण वंत ॥
निस्पृह पर उपकार रक्त शिव सुख वे विल संत ॥ ४ ॥
आप तिरे औरन कूं त्यारें कश्मल हरे तुरंत ॥
जिनका संग चिमन नित चाहत करंत प्रमाण अनंत ॥७४॥

* राग *

टेर—संयम विन रे जीवत ही नर प्रेत ॥
सामायक पूजा नहीं कीनी ना मन प्रभुको लेत ॥
धन धन करता चहुं दिश भटकत कुलकी करदी रेत ॥१॥
बालपनों खेलनमें खोयो यौवन स्त्री संगहेत ॥
वृद्ध भए तृष्णा अति परणी केशभए जब स्वेत ॥ २ ॥

राज्य दंडमें लाखूं देवे कोडी न धर्म के हेत ॥
निज शाला स्त्री सुतके कारण निज प्राणनकूं देत ॥३॥
नर भव दुर्लभ पाय धर्म तज बोवत पाप ही खेत ॥
निश दिन तू विषयन कू सेवत धनकी करदी रेत ॥४॥
करत याचना उदर भरणकूं कोईन कोडी देत ॥
अब पिछताए होत कहा सठ चिडियां चुगगई खेत ॥५॥
मोहादिक वश करत अनीति कबहुन पाई संहेत ॥
संयम जल विन रूखा चिमन एह अबतो मूरख चेत ॥७५॥

टेर—अनादि कालसे भव बन भटकत सारी उमर योंही
बीत गई ॥
बालपनो खेलनमें खोयो यों जवानी स्त्री संग गई ॥
वृद्ध भयो तब कांपन लागे नयनन नींद गई ॥
नर भव उत्तम जैन धर्म अरु सत्संगति ना लही ॥
नहीं उपदेश सुनां सद्गुरुका सब विधि विसर गई ॥ १ ॥
अब तो पुण्य उदय करिपाई शुभ परणति भई ॥
तज उपाधि सब सार चिमन लखि शरण जिन पदकी लई ७६

* दोहा इन्द्र सभामें *

इस संसार असार में बसते जन बहु भेद ॥
वे जन उत्तम लोकमें करै कर्मका छेद ॥ ७७ ॥
ज्यो देसोन्नति चहै कुल और धर्म प्रधान ॥
हेयादेय विचार युत अनेक गुणोंके स्थान ॥ ७८ ॥

आर्या चार तजे नहीं गहेन मिथ्या भाव ॥
श्रीजिन वचन धरै हिए सर्व जीव समभाव ॥७९॥
दर्शन ज्ञान चरित्र धरि पाले निरती चार ॥
शिक्षा व्रत अर तीन गुप्ति और अणुव्रत धार ।८०।
षट कर्मन कूं नित्य ही करै ज्यो समता धार ॥
सफल करै नर जन्मकूं पावै भव दधि पार ॥८१॥
ए उपदेशामृत नर पीवैं राख सदा समभाव ॥
चिमन अमर पद सर्वदा यह निश्चय चितधार ॥८२॥
जिन उपकार कियो नहीं नर भव व्यर्थ गमाय ॥
नहीं पदार्थ उपकार सम पट मांहि सुलखाय ॥८३॥
ज्यो रहस्य जिन धर्मका जिन शासनमें गाय ॥
द्रव्य मात्रमें व्यापरहे गुण अनंत पर्याय ॥ ८४ ॥
नय प्रमान के योग करि द्रव्य अनेक प्रकार ॥
नित्य अनित्य प्रभावयुत अणु अर स्कंध विचार ।८५।
बहु विध और क्षिप्रध्रुव निसृत भेद लखाय ॥
कहै अनुक्त विपरीत पुनि ज्ञान अनंत बताय ॥८६॥
समय अल्प कोलों कहों स्याद्वादिन के भेद ॥
इन बिन नहिं निर्वाह है सूत्र पढ़ह चउवेद ॥८७॥
जैन धर्म सम जगतमें नहीं दूजा अर धर्म ॥
जिनके सेवन से लहै चिमन मोक्ष पद शर्म ॥८८॥

टेर—जिनवानी शुभ आरसी भविजन तुम देखो ॥
श्रीजिनवर गुणरत्न जडितया है गज मौक्तिक सारसो ॥
श्री अरहन्त वदन पंकज निर्गत मान्‌ अमृत आरसो ॥१॥

चौदह पूर्व अंग बारह विधि करि भूषण शृंगारसी ॥
निज प्रभाव शुभाऽशुभ सूचक कहत सदा कर तारसी ॥२॥
पंच महाव्रत तीन गुप्ति अर सुमति पंच परवारसी ॥
चिमन भवो दधि मज्जित जनको तारक प्रभु पद पारसी
॥ ३ ॥ भविजन० ॥ ८५ ॥ इति

टेर—जिया तू मानो बात हमारी ॥
श्रीजिन नाम हृदयमें राखो शुभगति होय तुम्हारी ॥
सर्व दंभ तजि इक जिनसेवो दुर्मति त्यागो सारी ॥ १ ॥
विषयन में ज्यों तुम सुखमानो निजमति सकल विसारी ॥
जबसे जन्म लियो तुम तबसैं काल त्रास शिरभारी ॥२॥
जाके सुमरत पाप नष्ट कर मुक्त होत नर नारी ॥
मानुष जन्म लियो मुस्किलसैं अवतिरयों का बारी ॥३॥
मात तात सुत बांधव स्त्री जन इन संग होत ख्वारी ॥
ऐसा अवसर फिर नहीं मिलना चिमन रखो हुसियारी
॥ ४ ॥ जीया ॥ ९० ॥ इति

टेर—पार्श्व जिनेश्वर तुमहो तुमहो तारक मोकूं क्यूं नहीं तारो
अधम उधारक विडद जगतमें सुनिए नाथ तुमारो ॥
तिर्यग्देव नरक नरगति में देखो सब ही असारो ॥ १ ॥
विघ्न विनाशक शुभमति दायक मन वांछित दातारो ॥
कृपा करो प्रभुदास चिमन परजूं उतरों भवपारो ॥९१॥

—विषयनकी सोबतसें जियरा नहीं किनारा करते ॥
पाओगे घोर दुःख तिनसे नहीं डरते ॥
विषयन का भोगना जांनू विषका है खानां ॥
रास्ता हैं दुर्गतिका जिनागम में है गानां ॥
निकसे हो मुश्किल तमाम सें फेर क्यूं पडते ॥
खोते हो धन हरदम अच्छा नहीं करते ॥ १ ॥

जरा सोचोतो तुम इस दुनियाके हालकूं ॥
कोई नहीं संघाती सब चाहते हैं मालकूं ॥
ज्यो जानते हो कि ए अपना सो सर्व है परते ॥
इनके लिए बोलो गलत पर वस्त्र कूं हरते २ ॥

आखर चलोगे जबके तुमे घेरेगा कालआ ॥
कोई नहीं छुडेगा प्यारे तुमारे पासआ ॥
स्वप्नेकी सी माया है ए ज्यो दीखता है चिमन ॥
रटो इक नाम साहिबका जिसें सब काम ही सरते
॥ ३ ॥ विषयन० ॥ ६२ ॥ इति

टेर—गिरनारी पे गया खुनां ज्यो मुजकूं देदगा ॥
नेम पीवसे अतीव दिल मेरा लगा ॥

बलिभद्र कृष्ण आदि सर्व साथले सगा ॥ शक्रनंद नाग यक्ष साथ सुर खगा ॥ गिरना० ॥ १ ॥ पशुरन का मार सुनत ज्ञान दिल जगा । छांडके चले मुजे वृथा दिगा दगा ॥ जगत मसूर ब्रह्मचारी अबही क्या जगा । व कन्या त्यज मुजे शिव रमासे दिल लगा ॥ गिरना० ॥ २ ॥

व्यवहार बिन न होत पारमार्थी भी सगा ॥ बडे २ मुनीश भी व्यवहार कूं पगा ॥ पिया विना त्रिलोक में कोई नहीं सगा । देखा चिमन कूं खूब कुल मिल ठगा ॥ ६३ ॥

* होळी *

टेर—होरी खेलो भाई तन मन ध्यान लगाई ॥

दान शील तप शौच कुमकुमा मारत क्रोध चलाई ॥ ज्ञान गुलाल चारित्र अरगजा अष्ट कर्म छिणकाई ॥ जीव अति निर्मलथाई ॥ होरी० ॥ १ ॥ स्याद्वादकी पिचकारी लेकर कुमति नीर छिटकाई ॥ धर्म शुक्ल लेस्या ढफले द्वादश भावन गाई ॥ भव्य जीव मन भाई ॥ होरी० ॥ २ ॥ चेतन राय क्षमादि शस्त्रले कर मोहादि नसाई ॥ सुमति दया मिल होरी खेलै नाचत दिल उमगाई ॥ चिमन चित्त अति हरसाई ॥ ३ ॥ होरी खेलो० ॥ ६४ ॥ इति

टेर—लावो लावो पियाकूं मनाय मोसै राजल कहत सखीरी जावोरी लावोरी पियाकूं अबही जाऊंगी सुनों सखी मेरे पियाके पास ॥

पशुवनकी उन करुणां कीन्हीं चढगए गढ गिरनारी ॥ मेरे साइयां पूछी नहीं मेरे मनकी बात ॥ लावो० ॥ १ ॥ अब मैं किससे कहूं कही न जात मैं तोसै हा खावूं ॥ सखी एक बार ॥ लावो० ॥ २ ॥ वै प्रसिद्ध बाल ब्रह्मचारी कबहु न चहै सखी पराई नारी ॥ नहीं मालूम अब मुक्ति रमासैं कैसे करैंगे सात ॥ ३ ॥ लावो० ॥ ६५ ॥

टेर—सुण जियारे क्या करता मेरा मेरा यहां कोई नहीं तेरा ॥
मात पिता और भाई बांधव पुत्र गुरु अर चेरा ॥
मरण समय कोई साथ न लागत प्राणी जाय अकेला ॥१॥
कोडी कोडी करके तैने जोड़ा द्रव्य घनेरा ॥
हाथी घोडे दास खरीदे महिषी गाय वछेरा ॥सुण०॥२॥
वडे वडे केई बाग बनाए कूंवा वापी वेरा ॥
ऊंचे ऊंचे महल बणाए सारे जगकूं घेरा ॥सुण०॥ ३ ॥
यमका दूत जब प्राणी तेरा आय उठावे डेरा ॥
तब सबके सब यहां ही रहेंगे साथ लीया नहीं खेरा ॥४॥
सप्त व्यसन मोह मद दंभरु क्रोध लोभ है लुटेरा ॥
इनसे बचकर रहना भाई तू इक यह भोतेरा ॥ ५ ॥
दुनियां में तू रम रह्या मूरख इक दमका है बसेरा ॥
इसकूं तजकर तू अब प्राणी शरण गहो जिनकेरा ॥६॥
आंखि खोलके चलना चहिये इस जगमें है अंधेरा ॥
प्रभु भजन सम दूजा नाहीं दीपक तीन लोक अतिहेरा ॥७॥

टेर—धन्य सनम तुम्हे हरदम नमस्कार है ॥ छोडके मफ्-
धार मुजसैं रखा न सरूकार है ॥
अरसे कसीर सैं करती थी तेरी खिजमत ॥
अब नहीं मालूम क्यूं बदल गई मेरी किसमत ॥
तेरे दीदार की उम्मेद बडी लगी जिस समें ॥
तबके सुणी तोरण सें फिरगए सनम वनमें ॥ १ ॥
उठते वैठते आंखु में अंधेरा क्यों कर करूं गुजर ॥
बजुज तुम्हारे मेरी फर्याद सुणे कोन बसर ॥

अपने बिराने सम जाने मुजे ज्यो अगर ॥
मेरे दिलमें वोही हरदम आती है लहर ॥ २ ॥
लाखूं तरेके भोगे सुख गर साथ तेरे ॥
दिलवर सैंकडों सहे सदमें रोता नहीं जिगर ॥
एही लत रही तो होवैगा ज्यानका जरर ॥
हालये मेरा हुवा जिसपर नहीं लेते खबर ॥ ३ ॥
कर्मोंके सबब सैं मैंने पाया स्त्रीलिंग अवर ॥
जिस पर भी कुछन रही सुखकी खबर ॥
जिन धर्म विना न छदक पाया चिमन में ॥
जबर श्याम बिना न पति मेरें इसमें किया सबर ६७

टेर—धन्य धन्य है घडी आजकी निज स्वामी का दर्श
लहा भविजन जिनका स्मरण करत ही पावैं सुर
गति सौख्य महा ॥
क्षमादि दश हैं परिकर जिसके ज्यो धारे जिन भक्त महा ॥
जीव मात्रकूं निज सम जाणै सो सम्यक्त्वी जीव कहा ॥१॥
सब नर नारी जिन पद लखिके पुण्य बंध बांधे ज्यो महा ॥
सार चिमनमें जिन वाणी इक मानों शिवका पन्थ लहा ।६८।

टेर—जगत में कोई दमकी बात ॥
मूठी बांधे आया बन्दे हाथ झुलाए जात ॥
धन जोबन का गर्व न करना ए नाहिं जावत साथ ॥१॥
देख सँभाल प्रबल रिपु शिर पर काल लगावै घात ॥
कोई बचाय सकै नहीं उससे पिता मित्र अरु भ्रात ॥२॥

छांड असत्य चोर पर वनिता ए नित ठिग ठिग खात ॥
पल पल बढता छिण नहीं थम्भा यों बीते दिन रात ॥
तन धन यौवन छिण छिण विनशे कोई न लागे साथ ॥२॥
ये संसार चलाचल निश्चय सर्व विनश्वर तात ॥
इक निश्चल जिन धर्म चिमन में एही पर भव सात ॥६६॥

टेर—स्वामी मोय राखो सरणा कहा त्याग चले सजना ॥
नव भवसें में संग रही थी अब कैसी भई रचना ॥
भव दधिमें चहुं गति भटकत सुख न लहा छिगनां ॥ १॥
पुण्य पाप वश स्त्रीलिंग पाया ए दुख कैसे सहना ॥
तुम दयाल विन शून्य जगत में मुजकूं क्या करणां ॥२॥
तुम जगना सिद्ध भुवन में मेरी दया चित्त धरणा ॥
तुमसे देव समर्थ चिमनमें नहीं दूजा पथना ॥ ३ ॥
स्वामी मोय राखो शरणा० ॥ १०० ॥इति

